शुभ कामना

लौव वरष २०६५ सालके शुभ अवसरम हम्र हमार तर्फसे सक्कु देश वासिनके सुःख, सम्बृद्धि, सु-स्वास्थ्य व उत्तरोत्तर प्रगतिके लाग हार्दिक मंगलमय शुभकामना ब्यक्त करति ।

साथी संस्था परिवार

नेपालगञ्ज

सहयोग रु. २५/-

"सक्कु गोचाली एक हुई, प्रगतिशिल साहित्यम कलम चलाई"

थारु भाषाक जेष्ठ पत्रिका.

गोचाली

वर्ष ३६ अंक १५ / २०६४ चैत्र

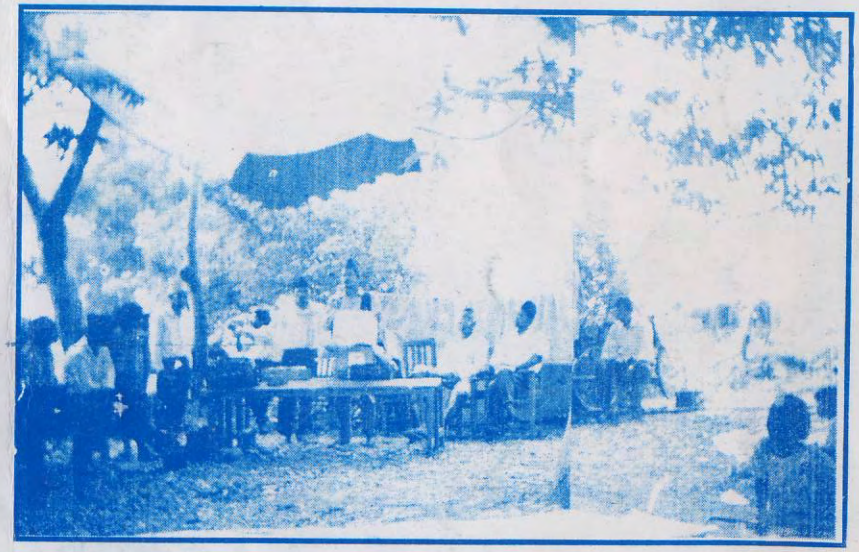

प्रकाशकः-

थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान मञ्च नेपाल

(गोचाली परिवार २०२८)

संयूक्त राष्ट्रसंघिय मानवअधिकार उच्चायुक्त लुइस आर्वर ह बर्दिया जिल्ला धधवार -४, बैदी आइल समयमा गोचाली पत्रिका हस्तान्तरण करति सम्पादक निरञ्जन कुमार चौधरी ।

थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान मंच नेपाल गोचाली परिवार २०२८ पहिला राष्ट्रिय सम्मेलन से निर्वाचित पदाधिकारीहुक्क ।

सम्पादकीय...

संविधानसभा एक जुगम एकचो

हमार देश नेपालम हुइभिरल संविधान सभाके निर्वाचनम प्रत्येक्ष उम्मेद्धारम २४० सिट समानुपातिकम ३३५ सिट मनोनित २६ सिट हमार देश नेपालम हुइना संविधान सभाके निर्वाचनम प्रत्येक्ष उन्मेद्धारम २४० सिट समानुपातिकम ३३५ सिट मनोनित २६ सिट कैक जम्मा ६०१ सिट के लाग हुइना संविधान सभाके निर्वाचनके लाग हरेक चुनावी क्षेत्रम विभिन्न र जनैकि पार्टी हुँक्र आपन आपन पार्टीक झण्डा, चुनाव चिन्ह, घोषणा पत्र (प्रतिबद्धता पत्र) ओ आपन सिद्धान्त अनुसार नारा लिखल पर्चा पम्पीलेट लेक आपन आपन पार्टीह ओ आपन पार्टीक उम्मेद्धवार जिताईक लाग प्रचार प्रसार म लागल बात। जनतनके साम्ने भोट माग जाईबेर जौन फे पार्टीक नेताहुँक्र अप्नह जनतनक सेवा करुइया हुइति कैक आपन पार्टीक प्रचार प्रसार करत देख जाइता। जानोकी संविधान सभाके पाछ जनतनक समस्या कौनेफे बाँकी नै रह जाई कना। तर दुःखक बात का बा कलसे चुनाव जितक जैना लचकदार घुम्ना कुर्सिम बैठ पैलसे उ नेता हुक्र आपन चुनावी समयम बोलल बात सक्कु विश्रा दर्थकी कना वात हम्र विगत चुनाव से लेक र ष्ट्रिय सांसद चुनाव जिता क पठाइल नेताहुकनक स्थिति ओस्त देख्ती आइल इतिहास आज हमार आग छर्लङ्ग बा। यी ब्यालम द्विविधामन पर्ना बात पइती पइती फे आज हम्र चुनावम जैना बात काकर आघ सरक बत्वाई भिरल बाती त यहिम हमन गंम्भीर होक स्वाँच पर्ना जरुरी बा। काकर कलसे विगतम हुइल संसदिय व आव २०६४ साल चैत्र २८ हवाय जैना चुनावम आकास पातलके फरक बा। काकर कलसे संसदीय चुनाव कलक सामन्ती, जाली, फटाहा हुकनके बनाइल संविधानके अधिनम रहिक कर पैना, जनतनक स्वाचल अनुसार काम कर नै पैना रह। उ जनतनक बहुमतसे बनाइल संविधान नै रह। उह ओर्से आब हम्र संविधान सभा कलक का हो ? संविधान के के मिलक बनाइ कैक गंभिर व चत्तुर हुइपर्ना जरुरी बा। यि संविधान अर्थात मुल कानुन हमार जिताक पठाइल जनतनक प्रतिनिधी हुक्र बनैही। जबसम्म हमार गरिब , शोषित, पिडित, वर्गके पक्षम बोल्ना मुल कानुन बनाइलक लाग व कथित शाही सेना हुकन से वेपत्ता पार गैल हमार थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान मञ्च नेपाल गोचाली परिवार २०२८ के संस्थापक अग्रज श्री सगुन लाल चौधरी लगायत भीम बहादुर चौधरी, कृष्ण प्रसाद चौधरी, रुप लाल चौधर ी, धनिराम चौधरी , शिव चरण चौधरी, वेद प्रसाद चौधरी, मंगल प्रसाद चौधरी जगत चौधर ी, चित्र बहादुर चौधरी लगायत ज्ञात अज्ञात शहिद हुकनक सपना साकार पारक लाग यिह २०६४ साल चैत्र २८ गते हवाय जैना संविधान सभाके चुनावम सक्रिय सहभागि होक ११ वर्षे जन युद्ध व १९ दिने जन आन्दोलनह मनन कर्ति गरिब सर्वहरा वर्गके पक्षम संविधान बनुइया पार्टीक उम्मेद्वार हुकन व पार्टीह आपन अमूल्य मत देक अत्यधिक बहुमतसे जिताई कना पाठक वर्ग हुकन अनुरोध कर्ति अन्त्यम गोचाली पत्रिका अकं १५ वर्ष ३६ हन बौधिक, आर्थिक, नैतिक लगायत हरेक किसिमके सहयोग दिहुइया सक्कु शुभ चिन्तक गोचाली हुकन धन्यवाद दिहती भविष्यम सहयोगके आकुर आशा कर्ति सम्पादकके कलम बन्द कर्ना अनुमति चाहती जय गोचाली परिवार।

गोचाली थारु भाषाक जेष्ठ पत्रिका वर्ष ३६ अंक १५ २०६४ चैत्र

का संविधानसभा से थारू मुक्ति हुई..........

विर सहिदनके रगतले देश के इतिहास लिखना क्रम जारी बा, विर सपुतनके सपना पूरा कर्ना जिम्मा कन्ध्यम आईल बा ......

तुहिन अन्तराष्ट्रिय तत्व व देश द्रोही फे कलह.....

भैया तिना तावन खा भुखाइल हुइब्या.....

लर्कनक आङ्म नि हुइटि लुग्रा मुहममाम मै दुख्यक......

विषय सूची

का कहाँ

कविता / गजल / गीत

शुभकामना- १
अभिवादन- ३७
अधिकार हम्र स्थापित करी- ४१
सजना- ४५
जनादेश- ४६
रातक कुक्कुर भुक्लसे- ४७

नाटक

निसराउ- १२

विचार / लेख

राज्यक संरचना.......- ४
नेपालम संविधानसभा- ३२
खे हमार लाग परिवर्तन- ३८
देश विकासके लाग यूवा...- ४२

बातचित

थारू भाषक विकासक लाग राज्यसे मान्यता पाई परी- १८

इतिहास

गोचालीक इतिहास- २४

सम्पादक मण्डल

प्रबन्ध निर्देशक :- जग्गु प्रसाद चौधरी

वरिष्ठ सल्लाहकार:- महेश चौधरी

सल्लाह अर:- राम चरण चौधरी जित बहादुर चौधरी,एकराज चौधरी,कविराम चौधरी,

सम्पादक:- मोती कुमार चौधरी, सुली राम चौधरी,नरेश कुमार चौधरी

व्यवस्थापक:- निरञ्जन कुमार चौधरी

सहयोगी:- वुद्धि राम चौधरी,कर्ण बहादुर चौधरी, बजारू चौधरी,मान बहादुर चौधरी,कृष्ण प्रसाद चौधरी सुन्दर चौधरी, जग बहादुर चौधरी, माया चौधरी, भागिराम चौधरी,

आवरण फोटो:- गोचाली दिवश मनैती

सस्थापक हुक्र महेश चौधरी, सगुनलाल चौधरी, कृष्णप्रसाद थारू (विक्री) भिमबहादुर चौधरी, लगायत गोचाली गण हुक्र

शुभकामना

मै घरक छपरम ठहयाक दिन जोन्याँ छुना भावना दिहतुँ गोचाली तुहिन
विदेशी हमन् दवाईत अँख्वा दुसैना जाँगर दिहतु गोचाली तुहिन

मैया प्रेमके गीत कविता, भावना, गजल केल जिन लेक छिल्कैहो गोचाली तुँ
थारुन्हँक अधिकार देखैना दिया दिहतुँ गोचाली तुँहिन

विदेशिनक तेलार बाटम छौंकी बनके जिन छट्‌टैहो गोचाली तुँ
थारुन्हँक छन्डीक छन्डीक संस्कृती झल्कैना गहना दिहतुँ गोचाली तुहिन

थारुन्हँक हक अधिकारक मुद्दा बोक्क नेगहो गोचाली तुँ
अकेलि महसुस जिन करहो कुम्हा जोर्ती मैया दिहतुँ गोचाली तुहिन

लौव नेपाल बनाईकलाग पैनिम रहल ढिक्री बनो गोचाली तुँ
अैना लौव नेपालक उपलक्ष्यम हार्दिक शुभकामना चह्राईतुँ गोचाली तुहिन

जित राम चौधरी (जितु)
धधवार ९ मेरैया बर्दिया
(हाल महेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस नेपालगंजम वि.ए. दोसर बरष म पह्ती बाट ।)

गोचालीहँ खत

प्रिय गोचाली

लाल सलाम ।

गोचाली तुँ आज फे जीवित बाटो कनाबात सुनबेर म्वार खुशीके सिमा नै रहल । मै त तुँ हेरा गैलो कि कहके सम्झल रहहुँ । पहिल त तुँ आपन जन्म दिवसम बलैना करो । मै फे धेरचो समावेश हुइलक सम्झन्य बा । उ ब्याला तुहाँसँग खुशीक बात साटा-साट कर्लक याद रेथा । शुभकामना देलक नै विश्वत । उ खुशीयालीम तुहाँर बाँटल दोस्की दोनियक गुरी जाँर ओ सुरिक शिकार खैलक चिन्हा सायद म्बारथे सुरक्षीत हुई । का तुँ आपन जन्म दिन मनाए छोरदेलो ? कि हमन बलाए विश्रा देलो ? हुइना त तुँ धेर चिन्तित बाटो कना सुन्ल बातुँ । चिन्तित हुइन्य फे स्वभाविक हो काकर कि सगुन, भीम, रुपलाल जसिन तुँहार आत्मीय सहयोगी मित्रहुँकन गुमाए परल । आब धेर चिन्ता जिनमानो काकर कि तुँ सही डगरम रहल सम तुहिन साथ देना सहयोगी आम्ही धेर भेटाए सकथो ।

तुहाँर जन्म जो संघर्ष से हुइलक हो ओ जीवन संघर्षमय बा । तुँ थारु भाषा तथा साहित्यके माध्यमसे पछगुरल वर्गहिन चेतना देक संघर्षमय बनाक उ वर्गके हक ओ अधिकार प्राप्ति ओ सुरक्षाके लाग प्रयास कलौ तुँहार उ प्रयासहन कुइ सकारात्मक रुपम लिहल त कुइ नकारात्मक रुपम । हम्र फे तुहाँर उ प्रयाससे प्रभावित होक तुहाँर सम्मान कर्ना उद्देश्यलेक एक्थो विद्यालयके नाउँ गोचाली प्राथमिक विद्यालय धैक सञ्चालन कर्ली तर उ समयके सरकार ओ सरकार पक्षसे तुहिन डरलग्दीक कम्युनिष्ट के संज्ञा दिहल ओ विद्यालयके नाउँ बद्लल । तुहाँर प्रभावहन देख्क रिस करुज्या हुँक्र तुहिन माओवादीक आरोप लगाके तुहाँर उप्पर प्रतिबन्ध फे लगैल । वाकर पाछ तुँ भूमिगत हुइलक सम जानकारी बा । माछीक शर ापले गैयक मौत नै आइत कना तुहिन थाहाँ हुइपरथ । तुहाँर फे मानव अधिकार बा हुँ । कहोरे कहोरे सुनल अस लागथ । कहाँ वा तुहाँर मानव अधिकार ? कहोरे खोज भेटाए सेकजाइ ? हुइना त भेटाक फे का कर्ना हो । नै सुन्लो । पिटबेर मर्ना उद्योग कर्लक हुँ, गोचाली चलाएवेर कुछु नै हो हुँ । प्रजातन्त्र ऐलक त थाहाँ पैल हुइबो । थाहाँ पाक फे का कर्ना हो चिरैन ब्याल पाकल जैसिन त हो । प्रजातन्त्र आइल कहके चोर चोरी कर पाइ परथ हुँ, डाँका,

डकैतीकर, भ्रष्टचारी सफाइ पाए, तस्करी कर .... पाए परथ कहके प्रजातन्त्रह प्रयोग कर्तिबाट । जे फे प्रयोग कर सेक्ना प्रजातन्त्रह चिन्ह सेक्ल हुइबो । आब आइना गणतन्त्रभर कसिन बा खै ? पहिल हें शंका कर्ना त उपयुक्त नै हुइ काकर कि एक्क बाबक दुइठो भाइ छावन ओस्टहँ कह नै मिली । एक्थो लाहुन्या एक्ठो हाउन्या फे छाप सेक्थ ।

तुहिन अराष्ट्रिय तत्व ओ देश द्रोही फे कल । देश द्रोही ओ अराष्ट्रिय तत्व कहुइया हुँक्र आब फरसे देशक अपार जलस्रोत बेंच सेक्ल, सुगौली सन्धी पाइफे हमार भूभाग धेर घट स्याकल , शासकके नाउँम अप्न बैठल रलसे फे सञ्चालन और जहनसे हुइती रलक मिलठा बैंक घोटाल: करइया, बन्वक तस्करी करुइया, विद्युत प्राधिकरण जसिन संस्थाहन भर्ति केन्द्र बनुइया, लाउडा, पजेरो जसिन घटना घटुइया, पञ्चेश्वर पञ्चिउँ सेती उप्पर कर्णाली, अरुण ३ जसिन सम्झौता कर्ना, व्यक्तिगत पारिवारिक स्वार्थकेल हेर्ना ओ राष्ट्रके स्वार्थ हेर्बो नै कर्ना जसिन ध्यारबाट इहाँ । आब तुँ फे कहो त केहो अराष्ट्रिय तत्व ओ देशद्रोही माओवादी अध्यक्ष प्रचण्ड "नेपालहन फे दो? द्वासर जंगबहादुर चाहल बा" कलक सुन्नु । हो तुँ फे पुरा सहमत हुइबो ना । तर १९०३ के जंगबहादुर नाही २०६४ जंगबहादुर चाहल बा । तुहाँर सँग बसीन जंगबहादुर नै हुइत ?

राजतन्त्रप्रति समर्पित हुइना जो राष्ट्रवादी हो कहुइया फे धेर बाट । आपन क्षमता नैर हल हुँक्र राजतन्त्रके आडम अप्न रमुइयन आम्हीन फे राजतन्त्रके मोह कर्ति बाट । अधिकांश नेपाली हुँक्र आब राजतन्त्रके आवश्यकता नि हो कहबेर फे कुइ घुमाउरो तरीकाले त कुइ स्वाभ्क आवश्यकता वा कतीबाट । आपन क्षमता नै हुइलक स्वर हो जसिन लग्था । अत्र बराबरा घटना घटल बा वहींम मनमानी ढंगले निर्णय कर्लबाट । जनतनके रायके आवश्यकता नै सम्झल तर र ाजतन्त्रके बारेम भर जनमत संग्रहके आवश्यकता परल बतैथ । पञ्चेश्वरके सन्धी कर्ना अकल्हे तयार हुइल, सेती, कर्णाली, अरुण-३ जनमत संग्रह त दूर गैल प्रक्रिया पुगाए फे नै परल । देशहन संघीय बनैना वा केन्द्रिय बनैनाम जनमत के आवश्यकता नै सम्झल । संघिय बनैलसे स्वायत्तता देना कि नै देना कि नै देना विषयम जनमतके आवश्यकता नै परल । शिक्षाके क्षेत्रम, पीना पानीके क्षेत्रम, विद्युतके क्षेत्रम, सञ्चारके क्षेत्रम, यातायातके क्षेत्रम, अस्तहँ और विभिन्न क्षेत्रम २/४ जन्हक मनामानो तरिकाले निर्णय कै जाइथ । तर धेर नेपाली जनता हुँक्र इन्कार कै सेकल राजतन्त्रहन बचाइ जाइत । पहिलक भ्रष्ट हुकनके त आब बात नै बत्वाइलसे फे हो जाई । प्रजातन्त्र आ स्याकल समयके भ्रष्ट हुँक्रन फे च्वाखा बना गैल । तस्कर हुँक्र फे कठित महान देशभक्त ओ नेता बनल बाट । अस्त अवस्था रहल कलसे लौव नेपाल कसिन बनी ? नेपाल शब्दके आग लौव शब्द धैक कागजम केल लौवनेपाल बन्ना त नै हो ? वसीन राय नै दिहकलाग तुहाँर सक्रिय भूमिका के आवश्यकता बा । आब पर्शु, विजय, थापा, पशुपति, सन्त महन्त जसिन सयूत जन्माक काम नै हो । सीरीस जसिन राज्य नाहीं जंगबहादुर जसिन राणा, भीमसेन जसिन, थापा , बलभद्र जसिन कुवँर बहादुर जसिन शाह जन्माओ यीह शुभ कामनाके साथम विदा चाहतुँ ।

उह तुहाँर चिन्तक

वि.आर. गोचाली

राज्यक पून : संरचना उत्पिडित थारुन्हँक मुक्ति

– नरेश लालकुसम्या

धाना दराई

मानव सभ्यताक जर खित्ख्वारबे मनै आपन गरिमामय रक्षाकलाग नि मुवत सम संघर्ष कर्लक भेटाजाईठ्। आत्म सम्मान ओ स्व निर्णय कर पैना ठाउँम रहरले कभु दाउम लगैलक इतिहास नि भेटाजाईठ्। नेपालम विगत ६ सय वर्ष यहोंरसे थारुन्हँक समस्या समयक्रम संग करां-आउर कर ं बन्टी गैल बा। यी अथस्थाम थारुहुक्र फे वितल लम्मा समयसे आपन स्व अस्तीत्व, स्वमुक्ति, आपन सहभागिता के लाग संघर्षरत बाट। थारुन्हँक समस्याह यहाँक सामन्ती, वाहुनबादीहुक्र चाभी बनाक मोज मस्ती कर्ती बाट। नेपालक एकिकरण पाछ खास कैक राणा शासकहुक्र आपन निरङ्कुश शासन चलाइक लाग राज्यम केन्द्रित शासन प्रणालीक सञ्चालन कर्ल। र ाज्यक यी सञ्रचनाहँ समन्तवादी, बाहमणवादी, प्रतिक्रियावादी शासकहुक्र परिवर्तीत परिप्रक्ष्य अनुरुप जनतन खास कैक आदिवासी, जनजती, दलित, मधेसी, महिलाहुँक्रन छन्डीक-छन्डीक तरिकाले छक्काक आपन अनुकुल र ाज्य व्यवस्था संचालन कर्ति अैलक देख्टी बाटी। राज्यक स्रोत साधन ओ अवसरम व्रम्रलुत कर्ती सर्वहारा वर्गके मनैन् हरेक क्षेत्रम पछगुरैती लैगिल बाट। राज्यक अधिकार, सुविधा,अवसर, निश्चित जाति ओ वर्ग समुदायकेल लेक यहाँ भयङ्कर विभेद हुईल बा। बहुजातिय, बहुधार्मिक, बहुसांस्कृतिक, बहुभाषिक ओ बहुक्षेत्रिय विविधता रलक मूलुकम राज्य सत्ता संचालन करुउईयन् हिन्दुकरण कर्ल ज्याकर कारण कुछ जाति लोप हुईना अवस्थाम पुग्ल। उपेक्षित वर्ग खाली जीउ पालकलाग औरक बाँधल दास बन बाध्य हुइल। आदिवासी थारुहुँक्र तराईक बन्झर भूमी आवद कर्लक इतिहास उपर जथ्याको गर्व कर्लसेफे लाखौंलाख थारुहुँक्र मूल थालो (दाङ्) मसे रखेद्वा पैल। भूमिहिन, सुकुम्बासी बनावा पैल। १९१० क मुलुकी ऐनम थारुहुक्रन मतवाली मासिन्या (जाँर दारु पीना ओ ओ खतम हो जैना, ओरा जैना) जातिक रुपम ठैक थारुहुकन जित्तीहँ मुवैलक इतिहास लिरौंसिसे विसाइ नि सेक जाई।

नेपालम बुर्जुवा पार्टीक त बात छोरी सर्वहारा वर्गक मुक्तिक लाग लर्ना कत्थ्याक नेताहुक्र ठाउँम पुग्क ब्राहम्हण बादक ध्यारास उप्पर उठ नि सेक्लक कारण सर्वहारा, उपेक्षित जाती, वर्गक मुक्ति अभिन सम्म सिंका भर नि हुईल हो बेन आउर करां करां हुईती गैल बा। नेपाल एकिकरण

राजनैतिक विचार विविधा

पाछ आपन स्वायत्त राज्य छिनावा पैलक थारुन्हँक पहिचान, मातृभाषा, धर्म, प्राकृतिक स्रोत उपरक सामूहिक परम्परागत अधिकार कठित उच्च जाती (वाहुन, क्षेत्री, ठकुरी, राणा) से डकैती करावा पैलक मार थारुहुक्र वाहुनवाद, सामन्तवादहँ आपन सवसे बरा दुस्मन ठन्ठ। थारुन्हँक शोषक, सामन्तवादी, वाहमणवादीहुक्रहनक पृष्ठपोषण राजसंस्था रलक ओर्से वंशिय र ाजशाही राजतन्त्रहँ बरा दुस्मनक फे दुस्मन मन्ठ। यी दुनु मेरिक दुस्मनहँ सदाक लाग अन्त्य कर क लाग थारुहुँक ऐतिहासिक जनआन्दोलन भाग-२ म ज्यानक परवाहा नि कैक लग्ल। लेकिन अब्व थारुन्हँक दुस्मन सामन्तवादी वाहुनवादीहुँक्र राजतन्त्रहँ गरिएइती फेर थारुन्हँक उपर राज कर्ना दाउम बाट ज्याकर लाग संविधानसभा विभिन्न बहानाम सर्ती जैती अन्तम संविधान सभाहँ खाली बहलक हाबा केल बनौना सोच बाटिन ओ चलखेल कर्ती बाट। संविधान सभाम सक्कु जाती, वर्ग, क्षेत्र, लिङ्ग समुदायक मनैन जानसंख्याक आधारम प्रतिनिधिन्व करैना मेरिक पुर्ण समानुपातीक निर्वाचन प्रणाली अधिकाँश जनतनक मागन रती रती फे सत्ता धारी राजसंचालक हुक्र पूर्ण समानुपाती नि कैक संविधान सभाक चुनाव अर्ध समानुपातिक/मिश्रित प्रणालीसे यिह २०६४ चैत २८ गते करैनाम चुनावी प्रचार प्रसारम व्यस्त बाट। निर्वाचन प्रणाली जो पाछ पार गैलक जाती वर्ग, क्षेत्र के जनतनक नजरसे गलत रलक संविधान सभा चुनावमसे बन्ना संविधान सभा थारुन्हँक लगायत अन्य पाछ पारगैल आदिवासी, जनजाती, मधेसी, दलिततन्हँ जातिय जनसंख्याक आधारम पूरा अन्हाँर निविल्गाई कि कनाम यी पाछपारगैल जाती, वर्ग समुदाय शसंकित बाट। ज्या हुइलसेफे संविधान सभाम जातीय जनसंख्याक आधारम आपन समानुपातीक उपस्थिती कराइक लाग थारुहुँक्र चैत्र २८ गते हुई जैती रलक संविधान सभाक चुनाव सफल पर्नाम लागल बाट ओ आपन समस्या सामाधानक डग्रा खुली कनाम आस्रा कर्ल बाट।

राजनीतिम अब्व सम्मक थारुन्हँक सहभागिता ओ राज्य संयन्त्रम पहुँच

राजनीतिक इतिहासम कौनो व्याला अप्नहँ राज्य हँक्लक थारुन्हँक अब्वक अवस्था राजनीतिम वरा कमजोर देख परठ्। २००७ साल से आज सम्मक स्थिति हेर्ना हो कलसे राज्यक नीति निर्माणक तहम थारुन्हँक पहुँच अन्ज्यादी न्यून देख परठ। भलेहँ थारु जातीन्हँक समावेशीक नाउम आपन अनुकुलसे बहार नै जैना हुकन समावेश कर्लक देख परठ तभु थारुन्हँक मुक्तीक ओ विकासक लाग कुछ प्रभाव नि परल हो। राज्य संयन्त्रम थारुन्हँक पहुँच कत्रा बा कर्ना यि तथ्याङ्कले प्रष्ट पारठ।

१. २०४८ सालक राष्ट्रिय निर्वाचनम २०५ संसद मध्य थारु संसद हुकन्हँक संख्या १७ रह
२. २०५९ " " " " " " " " " १२ रह
३. २०५६ " " " " " " " " " ७ रह
४. २०६३ सालक अन्तरीम संसदम ३३० संसद मध्ये " " " " १७ रह

अब्व हाल राजनीतिक तीन घटक नेपाली काँगेस, नेकपा एमाले ओ नेकपा माओवादी पार्टिक केन्द्रिय समिति म थारुन्हँक स्थान हेर्ना हो कलसे शुन्य देख परठ। ओस्तहँक थारुन्हँ

अन्जायादी घन बसोबास रलक जिल्ला राजनैतिक दलम पहुँच हेर्ना हो कलसे स्वाग लग्ती देख परठ । दाङ, बाँके, बर्दिया, कैलाली ओ कञ्चनपुरम थारुन्हँक जनसंख्या ३५ प्रतिशत २०५८ क राष्ट्रिय तथ्याङ्क देखाईठ लेकिन अव्वक स्थितिमा राजनीतिक ३ घटक नेपाली कांग्रेस, एमाले ओ माओवादी पार्टीम यी ५ जिल्लाम थारुन्हँक सहभागिता १७ प्रतिशत केल बा जव की बाहुन क्षेत्रीन्हँक सहभागीता ४८ प्रतिशत वाटीन ओ जनसंख्या ३१ प्रतिशत । अव्व फे राजनैतिक पार्टीक केन्द्रिय समितिम थारुहँक स्थिति दयनीय देख परठ । बर्दिया जिल्लाक २०५४ सालक स्थानिय निर्वाचन हेर्ना हो कलसे जिल्ला विकास समिति, बर्दियाम १५ जहानम ३ जान थारु समितिम बाट उ फे सदस्य पदम केल । ओस्तहँक ३१ गाविस ओ १ नगरपालिक मध्ये ९ जान केल थारु अध्यक्ष पदम ओ १७ जान थारु उपाध्यक्ष पदम थारु रलक देख परठ । जब कि बर्दियाक सक्कु गाविस नगरपालिकाम थारुन्हँक बाहुल्यता बा । बर्दिया जिल्लाम ५२.६८ प्रतिशत थारुन्हँक जनसंख्या बा ।

यी तथ्याङ्कले वर्तमान राजनीतिम थारुन्हँक अवस्थाक चित्रण प्रष्ट करठ् ।

संविधान सभासे थारुहुँक कर्लक असा /सवाल/माग

संविधान सभासे बन्ना संविधानम आदिवासी थारुहुँक, अन्य आदिवासी, जनजाति, दलित, महिला, मधेसी, मुक्तकमैया लगायत पाछ पारगैल सक्कु जाती, वर्ग समुदाय, क्षेत्रके र ाज्यम समान अधिकार, समान सहभागिता, समान पहुँच, समान सुविधा, अवसर ग्यारेण्टी कर सेक्ना संविधानक असा कर्ल बाट । बुँदागत रुपमा संविधानसभासे बन्ना संविधानम थारुन्हँक सङ्या सवाल माग –

१. आत्म निर्णय अधिकार सहितक संघिय संरचना भित्तर जातिय स्वयत्तता
२. राजतन्त्रको अन्त्य ओ लोकतान्त्रिक गणतन्त्रके स्थापना
३. धर्म निरपेक्ष राज्यक संस्थागत विकास
४. जातिय सभाक व्यवस्था
५. पाछ पारगैल जाती, वर्ग, महिला के लाग विशेषाधिकार
६. जल, जमिन, जंगल म आदिवासीन्हँक अग्राधिकार
७. तराईहँ 'मधेस' नि कैक थारुहत हुई पर्ना
८. आदिवासी हुँकन्हक उत्थानक लाग आदिवासी मन्त्रालय
९. त्रि-भाषिक नीति ।
१०. राज्यक हरेक अङगम थारुन्हँक जनसंख्याक आधारम समान सहभागीता ग्यारेन्टी
११. समान शिक्षाम सुविधा, मातृभाषम पठन पाठन
१२. नागरिकक मौलिक अधिकार, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता, दण्डहिनताक अन्त्य ओ दिगो शान्ती स्थापना

नेपालम संघिय संरचनाक आधार

संघिय संरचनाम राज्यक छुटी-छुटी राज्य वा संघिय एकाई मिलक हुईठ , संघिय संरचनाम केन्द्र ओ ओकर मातहतक प्रमुख इकाईक व्यवस्था संविधानसे निर्धारित हुईठ् । संघिय तन्त्र राजनैतिक दृष्टिकोणसे केन्द्रसे केन्द्र बाहार रलक शक्ति बीच हुइना दुरी ओ द्वन्द्व मिलैना

एक्ठो मजा व्यवस्था हो । संघिय राज्यहँ बराबर शक्ति प्रदान कैक देशक प्रत्येक क्षेत्र –केन्द्र सर कारसे समान हैसियतक सम्बन्ध रहठ । लेकिन एकात्मक प्रणालीम केवल एक्क शक्ति केल सर कारम रहठ । नेपालम संघिय शासनक आधार निम्न बा –

१. भौगोलिक विविधता ओ विकतता रलक देशक बहुत जनता राजधानी (केन्द्र) से हजारौं किलोमिटर दुर बसोबास कर्ना हुइलक ओर्से यहाँ संघिय पद्धती हुई परठ ।

२. विशेष जाती तथा भाषिक समूहँह राजनीतिक अधिकार सहमतिय, समावेशी, समानुपातिक ढंगले प्रदान करक लाग संस्कृतिक, भाषिक ओ क्षेत्रिय विविधताक संरक्षण करक लाग संघिय पद्धती बाहेक और उपाय नि हो ।

३. स्थानिय समस्या, आवश्यकता स्थानिय स्तरम मजासे पता रहठ लेकिन केन्द्रम मजासे पता नि रहठ । आपन लाग अप्नहँ नीति निर्माण, योजना तर्जुमा , आवश्यकता परिपूर्ति स्थानिय स्तर म अपन्हँ कर पाईक परठ ज्याकर उपयुक्त माध्यम संघिय संरचना हो ।

४. केन्द्रिय, एकात्मक राज्य संरचनासे जर्माईल विभेद, उत्पीडन ओ असमानता से मुक्त हुइटी राष्ट्र विखण्डन हुइनासे बचाइक लाग संघिय संरचना हुइक परठ ।

५. वहु संस्कृतिक, बहु भाषिक, बहु धार्मिक, बहु जातीय मुलुक नेपालम विभिन्न क्षेत्रम सघन रुपम एकत्रित होक वैठल समूदायक जनतन प्राकृतिक स्रोत उपभोग, आर्थिक विकास, कर संकलन, बजेटक व्यवस्थापन आदि काममम इमान्दार पूर्वक सहभागि कराइकलाग, भ्रष्टाचार र ्वाककलाग संघिय संरचना हुईक पर्ना बा ।

६. एक कर प्रणाली अनुरुप उठल राज्स्व केन्द्रम केल जैना हो कलक प्रान्त/स्थानिय तहक लाग नगन्य रुपम केल राज्स्व हुई स्याकठ । कौनो क्षेत्रक जनतनक आर्थिक अवस्थाहँ मध्यनजर कैक विभिन्न तहमसे आपन मेरिक कर प्रणाली सृजना कर पैना अधिकार सुरक्षित करक लाग ।

७. १०१ जाती, ९२ भाषा बोल्ना मुलुकम सक्कु जन्हँक भाषा साहित्य , कला, संस्कृतिक, मूल्य मान्यता, परम्परा, रितीरिवाजक संरक्षण सम्वद्धन करक लाग राज्यक यी संरचना उत्तम रही ।

८. सक्कु जाती, वर्ग, क्षेत्र, म शक्तिक पूर्ण रुपम विकेन्द्रित करण करक लाग ।

९. जातीय, स्वशासन, आत्मक निर्णयक अधिकारक जनतानम मागनहँ प्रतिनिधित्व राज्य नि हुई सेकी । केन्द्रिय सरकारहँ सुरक्षा, मौद्रिक नीति, पररार्ष्ट्र ओ आर्थिक आर्जनक अधिकार वाहेक सक्कु अधिकार संघिय सरकारहँ हुइलसे केल पूर्ण संघियताक अर्थ रही ।

संघिय संरचनाक ढाँचा कसिन रना ?–

संघिय संरचना कसिन रना कना विषयम विभिन्न विद्वान, भूगोलविद्, राजनीतिज्ञ हुँकन्हँक आपन आपना धारणा वाटिन लेकिन सक्कु जाहँन्क मत एक्क नि हुई स्याकल हो । विभिन्न व्यक्ति, ओ दल प्रस्तावित संघिय संरचनाक स्वरुपव आपन आपन मेरिक बाटिन् । संघिय संरचनाको स्वरुप बर्तमान जनसंख्या, भौगोलिक सुगमता, एतिहाँसिक पृष्ठभुमी ओ प्रकृतिक स्रोत साधनक सुविधा हेर्क संघिय संरचनाक रुपरेखा तयार करक परि वाकर लाग संविधान सभाम व्यपक छलफल होक प्रस्तावित संरचना जनतनथे पुगाक जनतनक राय लेहक परी ।

अमेरश नारायण झा क प्रस्ताव करल संघिय संचनाक स्वरुप

प्रस्तावित संघिय संरचनाक स्वरुपम थरुहठ प्रदेश कहाँसे कहाँ सम रनां कैक थारुन्हँ बसोवास रलक २४ सै जिल्लाके थारुहुक्त बैठक व्यपक छलफल कर परि । ओ छलफलक कैक आपन

कसं	प्रदेशक नाउ	प्रदेश भित्तर पर्ना जिल्ला
१	मिथिला प्रदेश	झापा, मोरङ्ग, सुनसरी, सप्तरी, सिराहा, धनुषा, महोत्तरी, सर्लाही, रौटहट, बारा जिल्लाको सिमरौनगढ क्षेत्र र ईलाम तथा उदयपुर
२	भोजपुरी प्रदेश	बारा जिल्लाको बाँकी क्षेत्र, पर्सा, चितवन जिल्लाको दक्षिणी क्षेत्र, नवलपरासी र रुपन्देही
३	अवधी प्रदेश	कपिलबस्तु, दाङ्ग, बाँके र बर्दियाको दक्षिणी क्षेत्र
४	थारु प्रदेश	दाङ्ग, बाँके र बर्दियाको उत्तरी भाग, कैलाली, कञ्चनपुर, सल्यान जिल्लाको केहिं भाग, सुर्खेतको केहि क्षेत्र
५	महाकाली-कर्णाली प्रदेश	डडेलधुरा, बैतडी, दार्चुला, बझाङ, डोटी, आछाम, दैलेख, जाजरकोट, कालीकोट, जुम्ला, बाजुरा, हुम्ला, मुगु, ओ सुर्खेत तथा सल्यानक कुछ भाग
६	तमुवान प्रदेश	डोल्पा, मुस्ताङ्ग, मनाङ, कास्की, लमजुङ ओ गोर्खा
७	मगरात प्रदेश	म्याग्दी, रुकुम, रोल्पा, बागलुङ, प्यूठान, अर्घाखाची, गुल्मी, पाल्पा, पर्वत, स्याङजा ओ तनहु
८	तामाङ प्रदेश	मकवानपुर, सिन्धुली, धाडिङ, नुवाकोट, रसुवा, सिन्धुपाल्चोक, रामेछाप, दोलखा, ओ चितवन जिल्लाक उत्तरी खण्ड ।
९	किँरात प्रदेश	उदयपुर जिल्लाक उत्तरी खण्ड, धनुषा, ओखलढुङ्गा, खोटाङ्ग, भोजपुर, तेह्रथुम, पाँचथर, सोलुखुम्बु, संखुवासभा, ताप्लेजुङ ओ ईलाम
१०	नेवार प्रदेश	काठमाडौ, भक्तपुर ओ ललितपुर

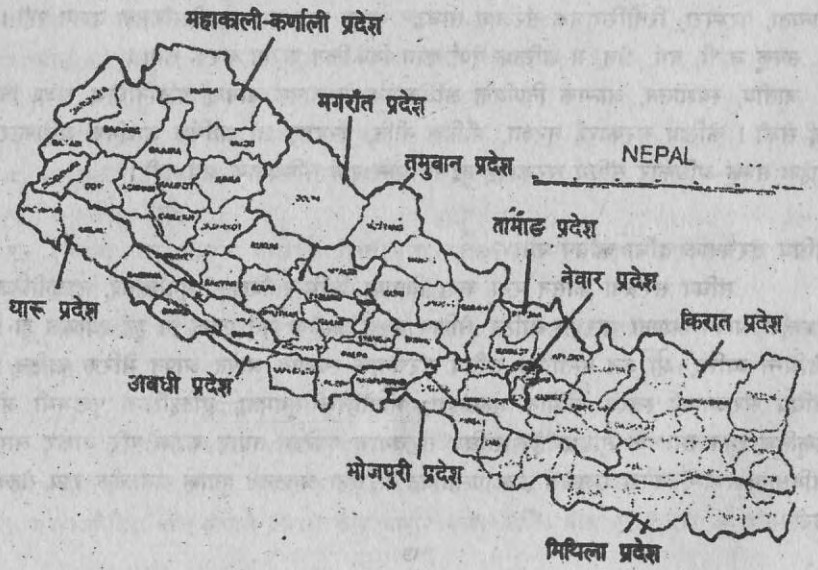

राजेन्द्र श्रेष्ठ क प्रस्तावित लौव नेपालक रुपरेखा

कसं	प्रदेशक नाउ	प्रदेश भित्तर पर्ना जिल्ला
१	याक्सुङ	ताप्लेजुङ, ईलाम, तह्रथुम, धनकुटा ओ संखुवासभा
२	खम्बु	खम्बु, खोटाङ्ग, भोजपुर, उदयपुर, ओखलढुङ्गा धनकुटा ओ संखुवासभाक कुछ भाग
३	सोसान्त (तम्बासालिङ)	सिन्धुपाल्चोक, काभ्रपलान्चोक, रसुवा, धाडिङ, नुवाकोट, मकवानपुर, दोलखा, रामेछाप, सिन्धुली ।
४.	नेपाल मण्डल	काठमाडौ, भक्तपुर, ललितपुर (ललितपुरक ग्रामिण भेगहँ सोसान्तम ढैक काभ्रे ओ मकवानपुरक उपत्यकासे ज्वारल भागहँ यी प्रदेशम ढर सेक जाई ।
५.	तमुवान	मनाङ, मुस्ताङ्ग, गोर्खा, कास्की, लमजुङ, (तनहुँ स्याङजा ओ पर्वतक कुछ भाग यी प्रदेशम ढर सेक जाई ।
६	मगर गण्डक	तनहुँ , स्याङजा, पर्वत, म्यागदी, बागलुङ्ग, पाल्पा, गुल्मी, अर्घाखाँची, प्यूठान, रोल्पा, रुकुम ।
७	भेरी	सल्यान, जाजरकोट, सुर्खेत, दैलेख, अछाम, कालिकोट, (रुकुमको पश्चिम भाग र बाजुराको दक्षिण भाग यसमा राख्न सकिने छ ।
८	कर्णाली	हुम्ला, मुगु, डोल्पा, जुम्ला, बाजुरा, (कालिकोटको उत्तरी भागलाई यसमा राख्न सकिने छ
९	महाकाली	बझाङ, डोटी, दार्चुला, बैतडी, डढेलधुरा ।
१०	कोशी (कोचिला)	झापा, मोरङ ओ सुनसरी
११	जनकपुर (मिथिला)	सप्तरी, सिराहा, धनुषा,महोत्तरी, सर्लाही
१२	भोजपुर (सिमरोन)	रौटहत, बारा, पर्सा ओ चितवन ।
१३	गौतमबुद्धपुर (अवध)	नवलपरासी, कपिलबस्तु ओ रुपन्देही ।
१४	थरुहट	दाङ्ग, बाँके, बर्दिया, कैलाली ओ कञ्चनपुर

नयाँ नेपालके रुपरेखा

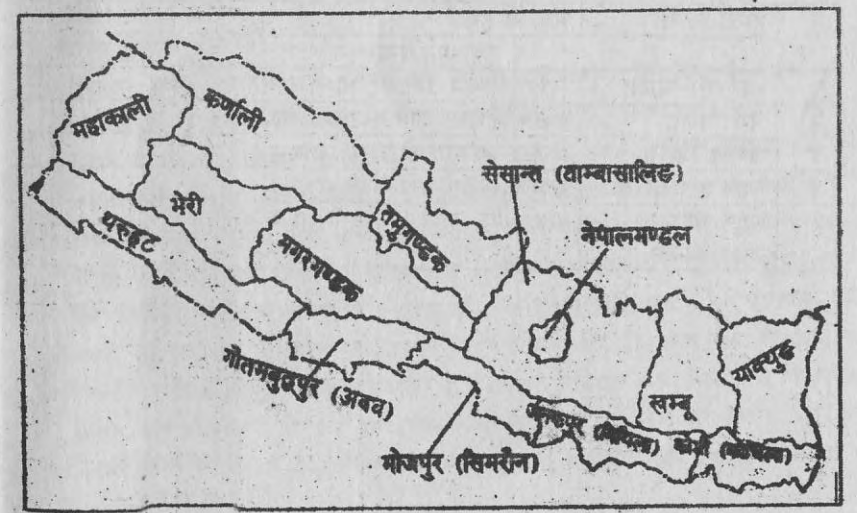

(राजेन्द्र श्रेष्ठ)

क्र	प्रदेशक नाउ	प्रदेश भित्तर पर्ना जिल्ला
		१. पुर्वान्चल
१.१	अरुण जिल्ला	ताप्लेजुङ्ग, संखुवासभा, पाँचथर, ईलाम, धनकुटा, ओ तेह्रथुम
१.२	सगरमाथा जिल्ला	सोलुखुम्बु, भोजपुर, ओखलढुंगा, खोटाङ ओ उदयपुर
१.३	पुर्व मधेस जिल्ला	झापा, मोरङ, सुनसरी, सप्तरी ओ सिराहा
		२ मध्यमान्चल
१	सैलुङ्ग वा गौरीशंकर जिल्ला	
२	त्रिसुली जिल्ला	
३	मध्य मधेस जिल्ला	
		३ राजधानी
१	काठमाडौं जिल्ला	काठमाडौं, ललितपुर, ओ भक्तपुर
		४ पश्चिमान्चल
१	मनासुल जिल्ला	मनाङ्ग, लमजुङ्ग, ओ गोरखा
२	अन्नपुर्ण जिल्ला	तनहुँ, स्याङ्जा, कास्की ओ पर्वत
३	धौलागीरी जिल्ला	मुस्ताङ्ग, म्याग्दी ओ बाग्लुङ्ग
४	रिडी जिल्ला	गुल्मी, पाल्पा ओ अर्घाखाँची
५	पश्चिम मधेस वा लुम्बिनी जिल्ला	चितवन, नवपरासी, रुपन्देही ओ कपिलबस्तु
		५ कर्णाली
१	जुम्ला जिल्ला	डोल्पा ओ जुम्ला
२	हुम्ला जिल्ला	मुगु ओ हुम्ला
		६ सुदुर पश्चिमान्चल
१	स्वर्गद्वारी जिल्ला	प्यूठान, रुकुम , रोल्पा, ओ सल्यान
२	भेरी जिल्ला	सुर्खेत, खैलेख, कालिकोट, ओ जाजरकोट
३	खप्तड जिल्ला	बझाङ, बाजुरा, डोटी ओ आछाम ।
४	व्यासऋषि जिल्ला	दार्चुला, बैतडी, ओ डडेलधुरा
५	सुदूर पश्चिम मधेस जिल्ला	दाङ्ग, बाँके, बर्दिया, कैलाली ओ कन्चनपु ।

कुमार योन्जन तामाङक प्रस्तावित रुपरेखा

कस	प्रदेशक नाउ	प्रदेश भित्तर पर्ना जिल्ला
१.	किरात प्रदेश	ताप्लेजुङ, पाँचथर, इलाम, तेह्रथुम, सोलुखुम्बु, खोटाङ, संखुवासभा, भोजपुर, धनकुटा, ओखलढुङ्गा ओ उदयपुर ।
२	तामाङ प्रदेश	काभ्रेपलान्चोक, सिन्धुपलान्चोक, रसुवा, मकवानपुर, नुवाकोट, धाडिङ्ग, रामेछाप, दोलखा ओ सिन्धुली ।
३	नेपाल प्रदेश	काठमाडौ, भक्तपुर ओ ललितपुर ।
४	तमुवान प्रदेश	मनाङ्ग, मुस्ताङ, गोरखा, लमजुङ, कास्की ओ डोल्पा ।
५	मगरात प्रदेश	म्याग्दी, बागलुङ, रोल्पा, प्यूठान, पाल्पा, तनहुं, स्याङजा, रुकुम, अर्घाखाँची, पर्वत, ओ गुल्मी ।
६	थारुहत प्रदेश	दाङ्गदेउखुरी, बाँके, कैलाली, कन्चनपुर, बर्दिया, ओ कपिलबस्तु ।
७	पहाडी प्रदेश (खसाङ प्रदेश)	जाजरकोट, सुर्खेत, दैलेख, आछाम, डोटी, डढेलधुरा, बैतडी, ओ सल्यान ।
८	मैथली प्रदेश	सर्लाही, महोत्तरी, धनुषा, सिराहा ओ सप्तरी ।
९	भोजपुर भाषिक प्रदेश	नपलपरासी, रुपन्देही, चितवन, पर्सा, रारा, र रौटहत
१०	कोचिला प्रदेश	सुनसरी ओ मोरङ

प्रदेशक मागन कार्ना दिन लग्घु आ स्याकल बा वाकर लाग थारुईक फे अव वल्गारसे कसरत कर परी।

घाना निखाई वेर

नेपालम रलक सक्कु मेरिक विभेद ओ असमानताहैं अन्त्य कैक देश हैं अग्रगमन ओहर डोग्याईना ओ सक्कु नेपालनिक भावना, समस्याहे समेटक राज्यक नयाँ संरचना वन जेम्न सक्कु जाती, वर्ग, क्षेत्रिय, समूदायक मनै राष्ट्रक ऐनाम आपन अनुहार द्याख पाई। कौनो एक्क जाती, बर्ग ओ क्षेत्र के केल देश नि होक बहुसंख्यक, अल्प संख्यक सक्कु जान्हैंक बोली र ाज्य सुन देहक परल। आब बन्ना संविधान बहुमतक पक्षम केल नि होक समस्त नेपालीनक हितम रह। बहुमतीय शासन प्रणालीफे आब असफल हो स्यककल आब राज्यक चलैना कलक सहमति ओ सम्झौतासे चलैना हो। आव बन्ना संविधान सामन्तवादी, वाह्मणवादी हुकन्हैंन्ह हाठम ना जाय। सर्वशक्ति मान जन्ता हुई पाई कना वरवार असा लेक संविधान सभाक निर्वाचनम सहभागि हुईल जनतन द्ववाखा ना हवाय ओ संविधान सभा विरबलक खिचरी पकाए असक केल ना हवाए। ज्याकर लाग सक्कु जन्ता सचेत हुई पर्ना बा। थारु हुँक्र के जमुराक नयाँ नेपाल निर्माणम आपन अमूल्य सहभागिता जनाई पर्ना ब्याला बा ओ एक होक सझ्या मागम एक हुई पर्ना।

नाटक

निसराउ

पात्र हुक्र

बाबा- रुपमान दाई- हिरामोती छावा-कालु

छाई- फुच्ची मामा- कृष्ण

(माघक द्वासर दिन विहानके बाबा रुपमान, दाई हिरामोती, छावा कालु ओ छाई फुच्ची आगीक पस्तर बैठक बरष भरिम का मजा कैगैल का नि मजा कै गैल कैक बत्वईत जाँर पियत। जाँरकसंग आफ छन्डीक-छन्डीक तिना सुरिक सिकार, सिन्की ओ आलु, गोभी, भाजी साग का का हो काका टिना। संग मेरिक मेरिक रोटी ढिक्री। बत्वती बत्वईती हिरामोती पस्कतरसे उठक गल्ली सम पुग्क ठ्याक बरे बेर सम लेंरि उच्च्या उच्च्या आपन भैयक बत्या हेरठ फे पस्क तर आक बैठ रहठ्।)

हिरामोटी : अभिन नि आ पुगल त का ?

रुपमान : अरि के री ?

हिरामोटी : निसराउ दिहुईया त काहुँ।

रुपमान-(आपन जन्नीक बातहन समर्थन कर्ति) हँ री अभिन नि त आईठुईत। (एक अधिक सोचक) आइती हुइही री फुच्चीक दाई साला।

कालु - आज हमार मामा निसराउ दिह आइही त मै मामाहन ढ्वाक लगम ओ मामा महिहन पैसा देही, आहा। मही कत्रा पजा लागि ना दाई।

फुच्ची- मै फेत मामाहन ढ्वाक लगम ओ मामा मही पैसा देही, का तै केल पैब्या पैसा ?

हिरामोती- (आपन ठ्न्वक ओहर मुह कैक मुस्कुरैती) हँ, हँ, दुनु जहन पैसा दी। कालु ओ फुच्ची- (खुशी हुइती) आहा आज त हम्र पैसा पैबी, हमार मामा हमन पैसा देहीं। मै त आज बहुत्त गुरी खैम।

रुपमान- (आपन जन्नीहन संकेत कर्ति) अरी दान्वे और जौर लान त च्वाँच तनिक नै भरल आस लागथो।

हिरामोती- (आपन ठन्वहन) अहो। माघक दिन त घर घर माघ मन जैठ जे। यी बुहवा त का घरहें भ्वादर भरा दरहि की का ? कितो तुँ अन्त जिन जैहो फे हेरा जैबो ओहरे। अब्ब भैया आइ त वाकरसँग पहुना सहेरुइया किउ नि रहहि।

रुपमान : हजार बाट जिन बता माघक वाघक दिन खाईक दराईता।

हिरामोती : अहों खाईक दरैलक ठवार हो त ? आब्वहे च्वाँच भरैबो त पाछ केहींम पिबो ? पं धेर मत्वार होक धुरौरम सुत्बो

(आपन परिवारम छाइ छावासे गन्थन मन्थन कर्ति खानपिन कर्ति रथ। कालु टुप्लुक्क अँगतम आ पुगठ्। अगँनम पुती किल गोहराईठ्।

कृष्णः दिदी कहोंर बाटो।

सक्कु घरक मनै बहार अँगनम निकठ ढ्वाक सलाम हुईठिन।

हिरामोती : (भित्तर से निकरक पहुरा सहेर्ती) -आज भैया पहुरा भित्तर लैजाउँ।

रुपमान- (खटिया विछैती) आओ साला खटीयम बैठो।

कृष्ण-(खटियम बैठनासे पहिल) दर्षन भाटु।

रुपमान- जिउ जिउ लाख वरिष।

हिरामोती- (लोटियक पानी आपन भैया हन देती , ल्या भैया पानी पी, भुँखासल पियासल हुइव्या, मै आब खान पीन बनाए जाइँतु।

कालु- (आपन मामाहन ढ्वाक लग्ती) मामा ढ्वाक ।

कृष्ण- जिउ जिउ भान्जा लाख वरिष, खब धेर पहहो, विद्वान हुइलो, बरा मनै बनहो न भान्जा, लेव यी रुप्या धरो।

फुच्ची- (मामाहन ढवाक लग्ली) मामा मै फे ढवाक लागतुँ।

कृष्ण- भान्जी लाख वरिष, म्वार फुच्ची भान्जी खुब धेर पहक ज्ञानी मनै बनह, लेव यी रुप्या।

हिरामोती खानपीन क लाग ठाँउ तयार कर्ना ओहर लाग्ठी।

रुपमान- (आपन जन्नीहन संकेत कर्ती) अरी फुच्ची ढाइ खैनापिना तयार हुइलकि नाही, झट्ट कर।

हिरामोती- एहांरे पस्क ओहर त बैठैना हो जे।

रुपमान -चोलो साला तल्हुक एक घची बहिरम पसकतर आगीक लग्ग बैठ जाइ, तनिक जुरार लाग अस फे करल।

कृष्ण- हाँ भाटु जुरार त लगल।

हिरामोती- (एक घचि रहक लोटियम पानी लेक) लेव पानी ओ भैयहन कोन्टीम लै आनो।

रुपमान- चोलो साला कोन्टीम जाई, कोन्टीम पुग्के गोन्द्री देखैती, बैठो साला गोन्द्रीम।

हिरामोती- (खोरियम दारु ओ दोनियम शिकार, मच्छी, आलु, सागपात, ओ ढिकरी देक सेक्क एक ओहर बेर्रीम बैठटी)। घर ओहर त हाल खबर त मज हुई भैया।

कृष्ण - हाँ दिदी हाल खबर त मज बा, अभिन सम भगवान मज मज रख्ल बाट।

रुपमान- पिओ साला काचील ख्याचील जौन बा तुहाँर दिदीक घरम।

कृष्ण- मिठ बा जे भाटु, महीत तनिक भेटायस करल।

रुपमान- आकुर जाँर, बराय लानो, तिना तावन फे चलैना हो त।

हिरामोती- (जाँर बरैती) ल्या भैया दानचे आकुर।

कृष्ण- हुइल हुइल दिदी जिन बरा आब।

रुपमान- (आपन जर्न्नाहन) अरी सुनत्या। सालाहन भात फे खौकल कर्ना हो। ज्वान मनै जाँरक

आहार काहाँ कर सेक्ही ?

हिरामोती- (आपन भैयाहन भात देती) ल्या भैया भात फे खा, वेन जाँर आबसे नै बरा दिहम ।

कृष्ण- (भात देखैती) दान्चे भात लैजा दिदी, अतरा भात धेर हो जाइ । कालु ओ फुच्ची फे आपन मामक पँजर बैठक भात खैथ ।

हिरामोती- (दान्चे भात तथियमसे झिक्के) अतरा भात त खा दरव्या भैया । खा रस रस ।

कृष्ण- भात खैना काम शुरु करथ ओ खाके सेकक दुथा हाँथ तथियम खाल्काए असक धोक मजासे हाँथ धुइकल अँगनम जाइथ ।

सब्कु जान खानपिन कैक सेक्क कोन्टीसे अँगनम निकथा ।

रुपमान- खटीया विछैती) आराम करो साला एक घची ।

कृष्ण- (एक घची आराम कैक सेक्के) आब मै आपन घर ओर लागुँ काहुँ भाटु । वातचित त जत्रा बत्वइल से फे नै ओराइत ।

रुपमान- (आपन जन्नीहँ हाँक पर्ती) अरी फुच्चीक डाई ।साला घर जाइ लग्ल, कालु, फुच्ची कहाँ बाट, आपन मामाहन ढ्वाक लाग बला ।

हिरामोती(कालु ओ फुच्चीहन घोक पर्ती) आर छावा कालु री छाई फुच्ची कहाँ बाटे ? तुन्हक मामा घर जाइ लागल मामाहन ढवाक लाग आओ ।

कालु ओ फुच्ची- मामा ढवाक लागी ।

मामा कृष्ण- लाख वरिष म्वार भान्जा ओ भान्जी ।

रुपमान ओ हिरामोती - जाओ त साला, जा त भैया मजासे जैहो, साला । मजासे जाइस भैया ।

कृष्ण आपन दिदी भाटु हुकन ढोक भेट कैक घर ओर लागथ ।

बाबाहे चिठ्ठी

-कृष्णराज सर्वहारी
किर्तिपुर, काठमाडौं

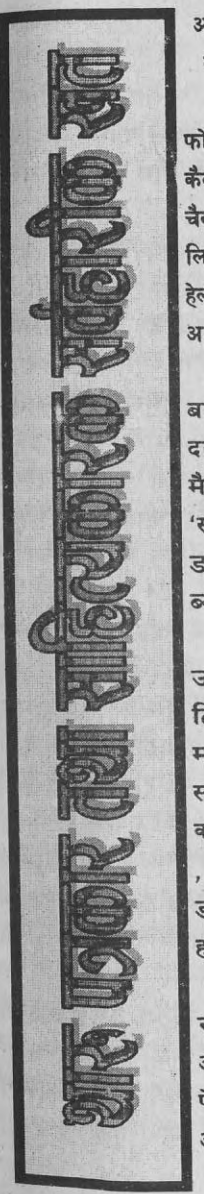

आदारणीय बाबा

सेवा ढोग,

यी एक्काइसौं शताब्दी कम्प्युटरके जवाना हो । आब गाउँ-गाउँमे फोन पुग राखल । अप्ने फोन मोवाइल बोक्ठी । मैं अपनेन एसएमएस फोन कैके कुछ सन्देश पुगाइ सेक्टुँ । फोनके घण्टी बजाके अपनेक कानक कण्टी चैनार पारे सेक्टुँ, लकिन खै का करे आझ जिन्गीम् पहिला बार अपनेनसे लिखके बाटओईनास लागटा । फोन बरा खर्चहा, उपरसे बहुत फेरा खाली हेलो-हेलो में किल सीमित रैह जाइठ् । कहक खोज्लक असली बाट घ्याचम आक अँटक जाइठ । ओहे ओर्से चिठ्ठीक सहारा लेहे पर्लक हो ।

बात कहाँसे शुरु करुँ, ओंरुवा नै पैलाई सेक्टुँ । शायद बाल्यकाल के कुछ सुनहरा समयके पोत्री खोलुँ ते मजा रही । दाडके देउखर उपत्यकक् चैलाही-६ छुट्की घुम्ना गाउँमे जब मै पहिला डफा पैला टेकलुँ, मोर बुदु डाईहें गरियाइट कति- 'सूरेसुर लर्का पैले बा, एकजने टे इहीयै डोऱ्याइट लाग जाई ।' डाई धर-धर-धरधर रोंइट कति । पत्ता नै डाईक आँस पोंछ्ना ब्याला अपने पहाडके कौन कोन्वमा रुख्वा गनि ।

मै जल्मलके एक अठवारसम ना हेर्लु, ना मुट्लुँ, ना उलिट-बिलिट हेर्लु कति । दुध पिउँ, बरे मुश्किलसे दुधक टिपुन्नीम् मुँह जोताइ सेकुँ । एक्के घरि रैहके भल्भलसे ओक्ला माँरु । बस खवाई, हेगाई मुटाई ओहे मुँहे ओर्से होए कति मैं सात महिनम जर्मलक लर्का । मजासे डेंह नै कसल, लकिन डाह कसिक-कसिक बहैली पौहैली । बास्तवमें पुरुष उरटा चिरैं हुइट , ठाँठेम् लर्कन अहरा खवइना खिस्सा बता-बता फुस्लैना टे डाइनके काम हुहन् । मोर डाइ यी भूमिका अच्छासे निभैली । हमरिहीन अपनेक कमी महशुस हुइ कब्बु नै डेली ।

बाबा अपने पहाड सल्यान, कवो रुकुम ओर फरेष्टर रही । वरषमे एक/दुई फेरा आइ । बाँसक कलम बनाडि । आपन स्कुलके होमवर्क ओरवइलक बाद रोज हमरिहिन १/१ पेज हयाण्ड राइटिङ्ग लिखे परे । ऊ हयाण्डराइटिङ्गके कापी अपने ६/७ महिनकवाद आइटे 'चेक करी । कवो-कवो अल्छी

लागके नै मजा अच्छर वने लागे टे हल्हिल बाँसक कलम सम्हारुँ। सोंचु बाबा आके कान ना मेंठे। ओइसिक टे अपने कबु एक टोकरा फेन नै लगैली लकिन कापी 'चेक' करेवेर एक दुई फेरा कानक जर हिलैना मरके कान अइठीलि टे डाईसे लिवरी लगैलक तनि-तनि याद आइठ्। ओठ्ठेसे हयाण्ड राइटिङ्मे लापरवाही कैना टे बाते नै रहे। ओकर फल आफ्न मोर अच्छर सुन्दर बा। जे फेन कहठ-कत्रा सुग्घर अच्छर यार।

सात कक्षामें फस्ट मर्लु तब बल्ले अपने पैन्ट सिवा डेले रही, ओ चैनिज कलम फेन नान डेले रही, तब्बे मोर खुशीक सीमा नै रहे। पहेवेर कौनो चीजके अभाव महशुस नै हुइल। खाली अपनेक उपस्थितिके कमी रहे। जौन कि क्याम्पस पहेवेर पूरा हो गैल।

पिताजी। अपनेक अस्थायी जागिर रहे। शायद गाउँहीक देवमणि बरापु एकबेर अपनेक कान भरडेलों-'नो लाइफ विडाउठ वाइफ, नो नलेज विडाउठ कलेज' अर्थात विना जन्नीक जीवन का, विना क्याम्पसके ज्ञान का। अपने फेन क्यामपस पहे परल मास्टरजी (अपने बहुत समय मस्टरवा फेन रही कति) बस, अपने अहसा मुड बनैली कि जागिर छोरछारके घोराही महेन्द्र बहुमुखी क्याम्पसमें पहेचला अइली। अपनेन् पते हुइ, पूरापुर पाँच वरषके वाद ब्याक डेहट-डेहट अपने आइए कटैली। 'नेपाल परिचय' कना विषय अपनेन् बहुत रुवइले रहे। आइन लावा नेपालके परिचय ऐसिन विलगाइटा कि सक्हुन् रुवाइटा। बहुट जन्हनके मुँहिसे सून परठ-इहीसे टे पुराने नेपाल ठीक रहे। अपनेन् कैसिन लगठ, के जने।

अपने पाँच बरषके बाद आइ.ए.कटैना, दादु सरासर दुई वरषमे नियमित आइ.ए. करैना यी बरा संयोग रहे। दुनुजाने वापपूत सूगे वी.ए. ज्वाइन कर्लि। अक्के बेंचम् बैठ्के पही। नारायण सिंह गुरुङ्ग मस्टरवा खिभ्फुवाए कति "मिस्टर टिकाराम, बुभ्फियो कि बुभ्फिएन ? न बुभ्फिए छोरासूग सोध्ने।" कक्षक् विद्यार्थी गलगलसे हॉसिट। मने बहुत कम मनै पतियाइट किति कि यइने सगे वापपूत हुईट कैहके। कोइ कहे- बरापु हुइहिस कोइ काका सगे टे का रहिंही कहिंट।

लकिन असलियत उहेरहे कि वापपुत संगे अक्के बेन्चमा पहना। टब्बे मैं आइ.ए. दोसर बरषमे पढु। पनौरा, दाङमें अजय बभ्नक घर डेरा रहे हमार। हम्रे तीनु बापपूत संगे क्याम्पस निकरी। कत्रा लोभ लगिटक समय रहे ऊ। मही लागठ, अपनेक संगे बितैलक सबसे स्वर्णकालके समय तब्बे रहे। दादु भाँरा ढोइलक नै रुचाईट, अपने मोर तीना कट्लक नै रुचाई, बस खाली पानी भरना रहे मोर काम।

बी.ए. क रिजल्ट आइलटे अपने नेपाली बिषय बाहेक सक्कुमें गुल्ट्या गैली। ओठ्ठेसे साईड पहना अपनेक हौस पुगल हस लागल। हमरिहिन ढारस बधैली-'लेउ छावन्के तुहिनहे हौसला डेहे हस संगे संगे पहे आइल रहुँ। अब तोहरे पहो, मैं बुढ़ाइल सुग्गा कहाँलग पहम। लकिन शिक्षामें लावा डगर दखैना अपनेक ऊ योगदानके कदर सारा अउर समुदाय फेन करना चाही कना मही लागठ।

जिन्दगी हरदम सुखके लडियम किल नै पौहठ। आइ.ए. सेकेण्ड इयरमें ब्याक लगाके मै फेन घरे माना किल मारुँ। अपनेक जागिर नै, हम्रे फेन विद्यार्थी किल। घरेम पैसक अनिकाल रहे। शायद भाइ-भाइ अंशबण्डा करक लग मालपोत कार्यालयमें जाइक टन अपनेन्के अपने कमैयासे पैतीस सय रुपैया व्याजपर सापटी मङले रही। ऊ ठैल रुपिया मै देखले रहू। महिन लागल घरम बैठले बैठले का काम उहे धैल रुप्या मसे आधा ठोरा निकराके लाहुर भाग डेना हो कि बरी सोंच विचारके मैं ओम्नेसे सत्र सय रुप्या चोराके काठमाडौ नाम डेलु। सोंच्ले रहुं- छोटमोट काम मिल्जाई। रिजल्ट निकरी टे ओंहरे बी.ए. पहम्। काठमाडौ मोर छुटकी ससुरा बैठिट। ओंहेक असरा रहे। लकिन काम मिली का ? एकदिन टे दिनभर ईटाँ चछिवइलु ओ अंग्री कुचा मर्लु, सत्रसय रुपिया सत्र दिन फेन नै पुगल। ससरारीक मनै फेन दम्दा चलजैट टे मजा हुइट कनामेर व्यवहार देखाई लग्लाँ। बस धुम-धुमाके देउखर घुम्ना अपने गाउँ आ पुग्लुँ। यी घटनाक फेन अस्टे सत्र वर्ष नाँघ गैल।

घरेम ओठ्ठेसे रोज हैमश हुइ लागल। का करे कि रुप्या टे मै फुँकके आइल रहुँ। में एकठो संघरियासे नेपालगंज ओर जैना तयारीमें रहु, ओहे कुछ कामे खोजे। लकिन पिताजी अपने टब्बे बरी कठिन निर्णय सुना डेली। जैना बा टे अपन अपन जन्नी लेके जाऊ। तुहिनके जन्नी के पाली ? आब भैल फर्साद। मोर टे रुवाइ छुट गैल भलभल भलभल आँस गिरे लागल बुहिया भर्खर खोटुवामसे धान लगाके आई रहे, सउन्या पानी बरषके निमिल रलह रहे। मने मोर आँखीक पानी निम्सना नाउँ नै लेहे। मै बुहिंयाहे कहलुँ घरक मनै यहाँसे खडेरटटाँ, चोल जाई ? बुहियाहे र मभ्फहानी कुछ पता नै रहिस्। पुछ्ला अहोइ, कहाँ ? मैं, रोइल मूह ते कहलुँ- घरेमसे पहिले निकी टे, गोर कहोंर जाइठ्। जैना डगर टे रहे नै कहू। ससरार देउखर हू धड्डी टवम् शरणम् कै गैल। फुरहन्से कहना हो कलेसे ससरार बैठेवेर भोज हुइलक दुई वरष वाद बल्ले बुठियासे लभ हुइल। लकिन अन्ते मोर जिन्गी सवसे खराब समय चलता कना अस महीं लागठ। हुइना टे का पता, जिन्गी अभिन बहुत लम्मा बा, इहीसे आउर खराब दौरा परे सेकठ कि का पता ?

पिताजी अपनेक बचनले मै घर टे छोरलुँ लकिन दुर जाइ नै सेकलुँ। लमही बजारमें कभु काल्ह अपनेनसे भेट हुए टे छावा घरे आए परल कही। लकिन मैं एक कानले सुनके दोसर कानले उरा दिउँ। डाई आके एकदिन ससरारसे पटुहिया हे लेके चलगैली। मैं पर गैलु, अकेली। उ बीचमें बाबा छावनमें दरार पैदा करक लग बहुत जाने कोशिश कर्ला। गहिरके सोंचलुँ टे महीं लागल धत् मै कैसिन बेकूप हुँ बाबक एक बचनले मै घर छोर देना। ओत्रा कना टे बुहवक अधिकारे हुइस। कर ना कमाही घरेसे भागके कहूँ काम चलि ? घरदम्दा बैठके कहुँ काम चली ? बिहान्नीक भुलाईल सन्भ्फ्या घर आ जाय कहे अस मै फेन डाइक आश्में आगैलुँ। जेठ महिना ससरार बैठाइ खवाए पियाइसे ठीक रहे, लकिन मोर भित्री मनके जलन मैं वाहेक के जान्टेहे। घर फिर्ति सवारीके बाद मैं बिलकुल परिवर्तन हो गैल रहुँ। चन्चलता हेरा गैल रहे। आइए क रिजल्ट आ गैल रहे, घरे बैठल-बैठल उकुस मुकुस जिउ मैं फेन दोभ्फे डेरा लेके घोराही बैठ्ना हो गैलूँ। बहाना रहे बीए पहर्ना। पिताजी भ्फोंकके मारे साइट अपने कहे फेन सेक्टी-पैसा चोराके भग्ना कहुँ छावा रठ, बाबक एकवचनले घरे छोर डेना कहुँ छावा रठ ? अपन कमाहीले पहवे टे पह मै

पहाइ ओहाह नै सेकम। मने अपने उदार दिलके बटी। पाछे कौनो तीत बचन महीहे लगैलक याद नै हो।

मोर भाग मै बी.ए. पास हुइलुँ। दाङमें एम.ए.के कक्षा नै रहे। दादु मस्टरवा बन गैल रहिट, बीए पासके बाद ! एम.ए. पहटी पहटी ठिला देला उहाँ। अश्रा रहे, दादु कहिंही-जा भइया, एक टे मैं एमए पहे नै सेक्लु , मोर सपना तै पुरा कर। मनेठीक उल्टा एमए का पहबो, मोर नन्हे मास्टरी ओस्टरी खोजो कना जवाफ आईल। ठीक ओहे बेला अपनेक आर्शिवाद प्राप्त हुइल-छावा तोर उच्च शिक्षा अध्ययन के आंकक्षा बा टे निसंकोच राजधानी जा। मैं भल्ही रुपैया पैसा टायममे जोहो करे नै सेकम। भगवान चाहिंहे टे जरुर छोटबर नोकरी भेटैबे पिताजी अपनेक आशिर्वाद काम करल आभ्रसे १० बरष पहिल काठमांडौ उचियइलुँ। ना कहटी कि काठमाडौ अइलक दोसर बिहान एकठो पत्रिकामें रिपोर्टरके जागिर हाँठ लागगैल। ओठ्ठेसे राजधानीम जम गैलुँ। पत्रकार कना छाप लाग गैल। राजधानीमे से जो कुछ किताब फेन लिख्लुँ, लेखक छाप' लाग गैल। यी सब अपनेक अर्शिवाद हो पिताजी।

अपने महीसे मोर कमाहीके एक रुपैया कब्बु मुहुँ फोरके नै मङ्ले हुई, हुइना टे बुहैले पर अपने फने जागिरे जीवन शुरु कैले बटी। भइवा मास्टरवा बा, गोतगात घरक अनाज बेचबिखन हो जाइठ। रुपिया पैसाके अपनेन् चिन्ता नै हो। बेन ओकर चिन्ता महीं बा। तीन तीन ठो छाईन् राजधानी पहैना, फुरेसे साँसट हो। आभ्र मैं अपनेन् कुछ डेहक चाहटुँ पिताजी। जरुर स्वीकर्बी कना आशा बा। सत्र बरषके बाद मै अपनेन् सत्र सयके रिन सत्र हजार टक्रायाइटुँ। बैंकमे काम कर्ना मोर संघरिया अत्रा रकम मुद्दति खातम ढर्बो टे २ बरषके बाद २ हजार रुपिया ब्याज आइठ कना सुनैले बा। यी रकम थारु भाषा साहित्य संस्कृतिके उत्थानमें लग्ना व्यक्तिन अपनेक डाई बाबा अर्थात मोर दिवंगत बुदी बुदुक नाउँसे पुरस्कार ढारी टे कैसिन रही ? यप्ने यहाँ मोर सुझाव अच्छा बा ना ? पिताजी मैं सिरमिटके घर बनाइ नै सेकम। मै किताबके घर बनैना कना अपनेन् बारम्बार कहटी आइल बाटुँ। यी रकम घर बनैनामें नाहीं , पुरस्कार स्थापनाके अक्षय कोष बनैना में लगैबी कना अनुरोध बा। जिहीनसे आउर जाने फे आपन भाषा बचैनमे लागिट। सदा अपनेक, मोर डुलारु डाईक नाउँ रोशन कर्ना तत्पर बा यी मझिल्का छावा। आभ्र अत्रे (यी पत्र थारु भाषा साहित्यक क्षेत्रम तिख्खर कलम चलैती रलक कृष्ण राज सर्वाहारी आपन बाबह लिख्लक हुईतिन खुशीक बात वहाँ पत्रम उल्लेख करल बमोजिम , वहा आपन बुदी, बुदुन्को नाउँके पुरस्कार देना घोषणा कै सेक्ल रहू। असौं यी पुरस्कार थारु भाषा सेवी महेश चोधरी पैटी, बटाँ जे थारु भाषक पहिला पत्रिका "गोचालीके संस्थापक मध्ये एक हुईट। मोंर सोंचाई हो, 'गोचाली हुक्र तमान् पत्रपत्रिका मार्फत् , किताब मार्फत थारुन् के कला, संस्कृतिके संरक्षणमें लग्ना,धेरसे धेर मनैं यी पुरस्कार पाईट, जिहीसे ओंइनहे आउर आघे बढ्ना प्रेरणा मिलिन ओ गोचालीक स्थापक अगुवा श्रदय महेश चौधरीह गोचालीक ओर्से ढयाउरनक शुभकामना बा।

थारु भाषक विकासक लाग राज्यसे मान्यता पाई पटी

उँकबार भ्रमैंट सगुनलाल गोचालीसे

सगुनलाल चौधरी क जरम दाङ जिल्लाक सौडियार गा.वि.स. वडा नं. ९ बेलहरी गाउँम बाबा आशाराम थारु ओ दाई गुयती थारुक दुन्दुर क्यावार म मसे जरम हुईल रहिन्। असल समाज सुधारक, शिक्षाप्रेमी, प्रगतीशिल बिचारधाराके सगुनलालके जिवन कठित उच्च जातिन्हँक, राज्यक शोषण, दमन, विभेद, उत्पीडन ओ अत्याचारक भुमरिम अर्भल थारु समाजम बित्लीन्। थारु भाषा, साहित्य , कला, संस्कृती लगायत समस्त थारु समूदाय क विकास उत्थान ओ शोषक सामन्तीनके पञ्जासे मुक्त करललाग सदिमान चिन्तीत रहना सगुनलाल थारु समूदायक मुक्ति, स्व अस्तीत्वकके लराई लरकलाग आपन सहयात्री सघरियनक गम्कार सहयोगम गोजालीक जम्म देल ओ थारुन्हँक मुक्तिक लाग गोचाली पत्रिकाक माध्यमसे क्रान्तीक शुरुवात कर्ल लेकिन हुकाहाँर सोच ओ लगनक प्रतिफल नि आ पुग्ती वहाँ आज थारु समूदायक संग, आपन घर परिवारक संग नि हुईट। २०५८ साल पौष १२ गते श्री जनसेवा मा.वि. बैदी बर्दिया स्कूल मसे सद्द असक पढ़ाक घर आई बेर डगरी मसे तत्कालीन शाही सेनाके कमाण्डो टोली गिरफ्तार कैलिन् तव् से वहाँ कहाँ कैसिन अवस्थाम बाट कुछ पता नि हो। आभ्र सगुनलाल थारु समूदाय संग नि रहलसेफे हुँकाहार देखलेक डगर थारु समूदायक मुक्तिक डगर बनल बा। हुँकाहार देखैलक डगर अनुसारके संविधानमसे राज्यक हरेक अंगम आपन उपस्थीती खोज्ना दिन आ स्याकल बा। यी ब्याल हम्र सगुनलाल ओ हुकाहार बचनहँ सम्झती। भाषा साहित्यक उत्थानके सन्दर्भम २०५७ सालम थारु समूदायक मैगर संचारकर्मी श्री एकराज चौधरीसे रेडियोम कर्लक बाटचित)

एकराज : नेपालम जनसंख्याक हिसाबले थारु हुक ६ प्रतिशत से धिउर रहलबाट नेपाल के जनगणना २०४८ मा देखा गइल बा। तर जनसंख्यक तुलनाम थारु भाषक पत्र पत्रिका एक दम कम बा। प्रकाशन हुइ भिरल गोती ग्वाता पत्रिका फेन प्रकाशन हुइने बन्द कर्ने करत देख पर्था। पश्छिउहवा थारु भाषक पत्र पत्रिकाक अवस्था त झन एकदम स्वाग लग्तिक बा। असीन काकर हुइती बात। भाषा विकास लाग अमर मातिक स्वरुप मान जैना पत्र पत्रिका आघ बढ्ाइक लाग का कर परी त ? अथवा समग्र भाषा विकासक लाग का कर परी कना विषयम आभ्र हम्रथारु भाषाक सब्से ज्याठ पत्रिका गोचालीक संस्थापक सम्पादक सगुन लाल चौधरी से बात बत्वाए जैती वाटी। सगुन लाल चौधरी आजकाल जनसेवा प्रस्तावित मा.वि. बैदीम अध्यापन कर्ति बात क उहा थारुभाषा विकासक लाग निरन्तर लागल बाट सबसे पहिल मै सगुन लाल चौधरी जी से अप्न हुक जौन गोचाली पत्रिका प्रकाशन कर भिरल बाटी याकर मुख्य उद्देश्य का रह कै खन पुछ तु ?

सगुनलाल : हमार दाङम अध्ययन कर्ना खास कैक थारु विद्यार्थी हुक्र हमार सौभाग्यवस २०२८ साल मन बांके , बर्दिया, कैलाली. कञ्चनपुर व दाङ के यी सक्कु ठाउँ के विद्यार्थीन के जमघट हुइल उब्यालम हम्र अन्य भाषमन पत्र पत्रिका पढ्र पाई व हमार थारु समुदाय भित्तर के फे आपन भाषक गीत, बट्कोही सुनी । तर हमार आपने थारु भाषकमन यी सब चिज काकर नै छाप जाइत कना हमन युवा हुकन उ समयमन गहिंर प्रभाव परल ओ हम्र आपनसे जन्ना सुन्ना मनैन से हमार थारु भाषामन काकर नै छाप जाइत पत्र पत्रिका ओ किताब कै ख पुछबेर यी सक्कु कर सेक्ना चिज हो । याकर लिय तुह्र आजकाल्हिक पढ्रल लिखल युवा हुक पहल कर पर्था कना उ समयके प्रगतीशील गुरु हुक हमन हन सल्लाह सुझाव ओ सहयोग देल । हम्र यी चिज हन मनम लेक बुझके उ समयके परिस्थिति अनुसार हम्र आपन समूदायक लाग कुछ न कुछ त प्रकरही पर्था । हम्र पढ्रल लिखल मनै वास्तवमन हमार समाज के लिय, भाषाके लिय , साहित्य के लिय, हमार थारु भाषा पत्र पत्रिका छपाइ पर्था कना भावना बोक्क सबसे पहिल हमार जाती भित्तर रलक तमाम किसिमके कुरीति हटाइक लाग एकथो पत्र पत्रिका के आवश्यकता बा कना महसुस कर्ली । का करकी पत्र पत्रिकासे गलत संस्कार हताईक लाग प्रचार प्रसार कर्ना लिरौसी परी ओ गैर थारु जातिनके थारुन्हँक उपर कै जैती रलक तमाम किसिमके शोषण, अन्याय, अत्याचार हन हटाइक लिय फेन हम्र पत्र पत्रिका के माध्यमसे लिखक प्रचार प्रसार कर सेक्बी कल से हमार जीवनमन कुछ महत्वपूर्ण काम हुईलक ठह्री कना हीसाबले सबसे पहिल हम्र २०२८ साल बैशाख १ गते सक्कु ठाउँके कञ्चनपुर,कैलाली,बाूके,बर्दिया,दाङ, सुर्खेत से हमार अन्त सम्पर्क नै हुइल रह उह ओर्से ओत्रा थारु युवा हुक भेला होके **थारु भाषा तथा साहित्य सुधार समिति पश्चिमाञ्चल नेपाल** गठन कर्ली ओ उस समितिस् एक्ठो पत्रिका प्रकाशन कर्ना सल्लाह हुईल जौन पत्रिकाक नाउँ सक्कु सघरियनक सल्लाहा अनुशार **गोचाली पत्रिका** धर्ना हुइली । उह अनुसार हम्र २०२८ स:ल से यी पत्रिका प्रकाशन कर्लक हुइती ।

एकराज : उ ब्यालम त पत्र पत्रिका प्रकाशन कर्ना प्रतिबन्ध रह, त्र अप्न हुक जौन तत्कालीन व्यवस्थाके विरुद्धम आवाज उठैना खालके लेख रचना ओ गीतवाँस फे उहीमन प्रकाशन करी उ ब्यालम अप्न हुकन कसीन समस्या आइल रह ?

सगुनलाल : शुरुम त हमन प्रशासन से ओसीन समस्या नि आईल । हम्र यी बाटम सबजे सचेत रही की तत्काली न व्यवस्थाके राज्य प्रशासन हमहन दुख दि कैक । उह मार उहिनसे बचकलाग हम्र गाउँ घरके हमार जातीन हम्र गोचालिन असिन किसिमके काम करती कै क बुझैली । उ बझैना क्रमम मै लागायत म्वार सहयात्री गोचालिन सक्कु जान विद्यार्थी रलही । गाउ घरक थारु समूदायहँ थारु समूदाय भित्तरक कूरीती ओ शोषण दमनक बाट बुझाईकलाग गोचाली हुक शुक्रवार गाउँ गाँउम साहित्य गोष्ठीक संचालन करी । उ कार्यक्रम हमार थारु भाषी मनै थारु भाषा प्रति आस्था कर्ना, थारुनके हित चहना, तमाम गैर थारु जातिन फे प्रगतिशील विचार धाराके शिक्षक, बुद्धिजीवि ,विद्यार्थी सक्कु जान हमन साथ देल । हमार काम मन हुक्र हर मेरिक सहयोग जेटैना मद्दत कर्ल । उ कारणसे प्रशासन से ओत्रा नै दरैली । जब हम्र पहिलो अंक प्रकाशन कर्ली उहीमन हम्र दाङ के थारुन के समस्या जो खास कै ख मौहीयानी हकके समस्या के विषयम जोरदार आवाज उठैली ओ जिम्दार हुक्र कमैयन धर्के कमैयन उपर कर जौना शोषणक

पर्दाफास कर्ली जौन ब्याला थारु समूदायक लाग यी सबसै भारी समस्या रह जौन अभिनसम्म फे जित्तीहँ बा । हरदम गरिब जनतनक पक्ष लेक जग्गाक जे वास्तविक धनी हो वाकर पक्ष लेख मुद्धा मामिला कना ओ वकालत कर्ना काम कर लग्ली उ व्याला प्रशासनसे समस्या आ पर लाग । उ व्यलाम दाङ्के सि.डि.ओ. जसिन मनै हामर शक्रबारके कायकमम आके वहाँ जन प्रतिनिधि सगुन लाल चौधरीहँ (मै सगुन लाल नाई द्वासर एक जन म्वार मित सगुन लाल) हातपात करल गाउँ मन आक गाँउक मनैन पितपात कै क मोहीयानी हक हन छिन्ना काम अर्थात चौकुर खैलरु मनैन अध्यम सही करैना काम तब्बक प्रशासन करल । वाकर विरुद्धम हम्र पुरै किसान हुक्र, विद्यार्थी हुक्र आवाज उठैली । ज्याकरफलस्वरुप बरा भारी आन्दोलन हुइल । उसव चिज फेन हम्र गोचाली पत्रिकाम दर्ली । उहिनस् हमार गाउले स्तरके शोषीत, उत्पीडित जनतन हुक्र,बुद्धिजीवी हुक्र श्रमजीवी जनतनके पक्ष लेना वकील हुक्र सक्कु जे हमन समर्थन कर्ती, स्याबासी देल । यी कामले एक ओहर हम्र स्याबासी पैली कलसे द्वासर ओहर जाली, फताहा , प्रशासक हुक्र, भ्रष्टहुक्र हमन नै मजा दृष्टिकोण से ह्यार लग्ल । उ समयसम त खास कुछ नै कर सेक्ल । तर दोस्रा अंक प्रकासन कर्ली तब थेसे हमार गोचाली पत्रिका जफत कर्ल । प्रचार प्रसार कर्लक कारणसे मै लगायत अन्य सक्कु म्वार सहयोगी हुकन कोही हन छ महिना कोही हन ३ महिना, कोही हन एक महिना जेल खाद परल । एकठो गोचाली हन त सर्वोच्च अदालत से ५ रुपैया जरिवाना कै कन कै क छवारल रह । उ परिस्थिति मन हमार अत्यधिक गोचाली हुक्र मध्य कौनो त पलाएन हो गैल डरा गैल की हम्र असिन काम नै करक चाही । यी काम छोर्ना चाही । तर मै लगायत तमाम गोचाली हुक्र भूमिगत रुपमन फेन हम्र आपन थारु भाषा हन आग्गारी बह्राइ पर्ठा । प्रशासनहन दबाब देक हुईल से फे हम्र यी चिजहन अघारी बह्राइ पर्ठा कना भावना लेक उ अभियानहँ निरन्तरता देली ज्याकर कारण आज फे गोचाली पत्रिका हन हम्र अनियमति हुइलसे फे (कभु वार्षिक, त्रमासिक) प्रकाशन कर्ना मन जुटल बाती ।

एकराज :यी पत्रिकक नाउँ गोचाली धर पर्ना, और नाउँ धर्लसेफे त हुइने रह । याकर नाउँ गोचाली धर पर्ना ओसीन कौनो कारण रह की ?

सगुनलाल : खास कै के नाउँ के विषय मन महेश चौधरी, भगवती चौधरी मै सगुनलात चौधरी लगायत हमार धिउर सहयोगीन । हम्र केन्द्रिय कमिति बनैल रलही, जिल्ला कमिति बनैल रलही । उ कमिति भित्तर रहल सक्कुन से हम्र सल्लाह लेली, छलफल कर्ली । और बहुत से फेन नाउँ उहाँ प्रस्तावित हुइल । तर हम्र हमार उ समय मन गोचाली कह तेर एकथो मैत्रीपूर्ण रुपमन एकता बद्ध हुइना एक जुत हुइना भावना लेक बुझैना सजिलो परि कना केन्द्रिय कमिति के टहर हुइल , उह ओर्से हम्र गोचाली नाउँ धरकन गोचाली पत्रिका छपैना काम मन आघ बहैलक हुइती ।

एकराज : आजकाल *गोचालीक स्थिति कसिन बातिस, बह्रयासे जाइता कि नै जाइथो ? कौनो मेरिक समस्या परल बा की ?*

सगुनलाल : गोचालीक लिय समस्या ठह्रीयईना काम त सुरु मसे प्रशासनसे कर्ति आईल बा । आर्थिक समस्या फेन ओस्तहँ पर्ती आईल बा । खास कैक सरकारी मान्यता नै पैलक

कारण से गोचाली पत्रिकाहँ आर्थिक बोझ परता । तभु फेन हमार मनम उत्साह जोस जागर हुइलक कारण से यही हन निरन्तरता दिहल बाती ओ निरन्तरता देह फे पर्ठा, चाहे जसिक हुइल से फेन यीहीन जगाइ पर्ठा । हमार शोषीत उत्पीडित जनता कौनो ना कौनो दिन याकर महत्व बुझके हमन हन मैगर साथ देही कना हमार सोच हो । जहाँ सम्म अप्ठ्यारो कना चिज हा, यी प्रशासनसे, शोषक सामन्त हुकनसे जे जनतन के हित नै चाहथ जनतन के प्रगती नै चाहथ ओसीन किसीमके तमाम प्रतिक्रियावादी हुक्र यी पत्रिक हन दबैना प्रयास कर्लक हुइत । जस्त उदाहरणके लाग दोस्रा अङ्क गोचाली पत्रिका प्रशासनसे जफत कर्ल । खस भषा बाहेक ओर भाषा हन अघारी नै बढ्न दिह परथ कना पञ्चायत कालके राज्यके धारणा रहिस ओह अनुशास प्रतिबन्ध फे लगैल रह । तर बहुदल आन गैल हम्र फेन दोस्र जुर्मुराके, उत्साहीत होके ओहीहन आघ बढ्हैली । काम कर्ना ब्याला मन तमाम अप्ठ्यारो रहत यी स्वभाविक बात हो । प्रकृति के नियम कभु हरेर हुइत कलसे कभु पत्झर हुइत । ओसहेक् हमार गोचाली फे समयकमम कभु हर र हुईल मनम उत्साह जाँगर अइथ जोस जाँगरक साथ गोचालीहुक अघ बढ्ठ । कभु कुछ समस्या पर्क गोचालीनक उत्साह घट्क पाछ हत्ना प्रवृतीक कारण गोचाली पत्रिका प्रकाशनम अप्ठायारो फे आईल । जाहाँ सम मै संस्थापक हुइलक कारण से यही हन आघ बढ्हाइक लाग निर न्तर प्रयत्नरत बातु ओ जब सम साँस रही तब सम प्रयासरत रहम । महिन ढ्याउर आशा बा आब लौव पिढी हुक लौव युवा गोचाली हुक यही हन आघ बढ्हाइक लाग यही हन बढीसे बढी जाँगर करही । युवा गोचालीहक प्रयास फे कर्ती बात तव फेन पुरान मनै काम कै देही कना भावना हुईलक ओर्से कदम जौन मेरीक जत्रा आघ बढ्हाइ पर्ना हो, ओत्रा नै बहर्लक ओर्से हमार बिच विचम अप्ठ्यारो पर्ती अइलक हो । काम कर बेर अप्ठ्यारो परठ लेकीन ओह समस्यासे डर ाक निरास होके पलायन होके पत्रिका छपाई नै परठ कना हिसाब किताब अनुसार हम्र पाछ हुई नै चाहलक हुइती । समय परिस्थिती अनुकुल यहीहन बिचबिच मन विविध किसिमके अप्ठ्यारो पर्ती अइलक कारण से याकर २०२८ साल म जरम हुईलक रल से फे जात्तीक ढ्याउर अङ्क प्रकाशन नि हुईल हो । यही निरन्तरता देती आइलसे त कमसे कम ३०-३१ अंक प्रकाशीत हो सेक्ना हो । ओत्रा नै हुइस्याकल । तभुपर फे हम्र यही हन आघ बढ्हाइक लीय यहीहन निरन्तरता देती रहना हमार आत्म विश्वास, लगन नि मूवल हो जित्तीह तौगर बा ।

एकराज : यी थारु भाषा मन विभिन्न पत्र पत्रिका प्रकाशन हुइठा, हुइटी बा । तर बहुत पत्र पत्रिका समय समयम प्रकाशन हुइना फेर दोस्र जुरार होजैना, बन्द हुइना देख परठ । याकर खास कारण का हो । याकर समाधानक लाग का कर परी ?

सगुनलाल : खास कैके हमार थारु भाषा हन सरकारी पक्ष से रीत पूर्वक मान्यता नै दिहत सम , यी समस्या पल रही । अस्त समस्या और देशम फेन परल । उदाहरण के रुपम भार तमन खस नेपाली भाषा के लीय उहाँके नेपाली भाषा प्रेमी हुक्र बहुत वर्ष सम संघर्ष कर पर्लिन । आब वहाँ खस नेपाली भाषाहन राष्ट्रिय भाषा के सूचीमन दर्ता कै राखल ज्याकर कारण वाकर इतिहास उ भाषाम किताब प्रकाशन हुईल बा । सरकारी काम काज म फेन लगाइ पैना, विद्यालयम पढ्हाइ पैना उ पहर्लक चिज हन फेन सरकारी काम काज मन लिखापढी कर पैना व्यवस्था नै हुइत सम, राष्ट्रिय भाषा नि हुई सेक्ल से फे थारुन्हँ घन बसोबास रलक ठाँउक

स्थानीय सरकार, सत्ता, सरकारी कार्यालयमन थारु भाषाम लेखापढी के व्यवस्था नै हुइत सम हमार अवस्था अस्तहे रही । का करकी जब सम थारु भाषाहँ सरकारी मान्यता दिहुवाइ नि स्याकब तब सम थारु भाषा पहर्क का कर्ना हो ? कना प्रश्न पलि रही । हमार थारु भाषाक विकास उत्थान नि हुईनाक प्रमूख समस्या यिह हो । जस्त उदाहरणक रुपम हम्र थारु भाषा म प्रशस्त किताब लिख दर्बी । अथवा पत्र पत्रिका छपा दर्बी । ओहीहन किन देनामनै कबसम नै र हही ? जबसम सरकारी पक्षमन, सरकारी तर्फसे ओहीहन व्यवहारीक रुपम मान्यता देना चलन नै रही । तब सम यी हमार सामुदायिक चिज केल हुइ । राष्ट्र के चिज नि हुई सेकी ओ यी भाषा राष्ट्र मान्यता प्रदान कर्लक भाषासे पाछ परल पली रही यो यी भाषा बोल्ना समूलाय पछगुरल पली रही । बीच बीचम पत्र पत्रिका छपा जैथा, रुक जैथा । याकर कारण फे यीही सरकारसे कौनो किसीमक मान्यता, सहयोग प्रदान नि कर्लक कारण से हो । नेपालक संविधान २०४७ मत लिखल बाकी आपन आपन मातृ भाषामन पढ्न लिख पैना, पठन पाठन कर पैना कैक लिखल बा तर सरकारसे व्यवहारीक रुपम एक्क भाषाक नीति लागु कर्ल बा । हमार थारु भाषा हन अन्य भाषीहन दबाइ खोज्ना, हेपाहा, चेपाहा प्रवृती बा । सरकारी अद्दा अदालतम फे यी प्रवृती रलक बहुत बाट । कारण वहाँ उह हेपाहा चेपाहा प्रवृतीक मनैनक राज बातिन । आपन अस्तित्वक लाग काठमाडौ महानगरपालीका, जनकपुर जसिन ठाँउम उ ठाँउक आदिबासी नेवारी ओ मैथली भाषीहुक आपन भाषाम स्थानीय सरकारी काम काजक भाषाक रुपम प्रयोग कर पैना कैक सर कारसे सममती कर्ल । ओहीहन सर्वोच्च अदालत खस नेपाली भाषाह केल मान्यता देना, अन्य भाषम लिखापढी कर नै देना निर्णय करल । उ एक् दमै जनजाति हुक्रन दबैना, हुक्रना के भाषा लोप करैना नीति लेलक अख्तियार कर्लक हो । उह कारण से पहिलक हमार संघर्ष का रह कलसे हमार भाषाम पत्र पत्रिका छपाइ पैना चाही, रेडियो नेपालसेफे थारु भाषके प्रशारण कर पैना चाही आपन क्षेत्रमन आपन आपन स्थानिय सत्तामन आपन भाषा प्रयोग कर पैना चाही, विद्यालयमन पहर्क उह किसीमक रोजगारी पैना चाही कना व्यवस्था लागु करैना । यी व्यवस्था जब सम कराई नी सेक्बी तबसम के लीय फेर हम्र संघर्ष कर्ती रहब । याकर लिय सम्पूर्ण थारु एक हो क अन्य पाछ पारगैल भाषीक समूदाय, राजनीतिक अगुवाहुकनसे सहकार्य कर्ती संघर्ष कर परी ओ थारु भाषा लगायत नेपालम बल्ना अन्य भाषाहँ राष्ट्रिय रुपम स्थान दिहुवाईक पर ी । यी कर नै सेक्बी त हमार थारु भाषा के स्थितिम सुधार नि आई बेन कमजोर बन्ती जाई । नियम कानुनम कहत लर्का पर्का आपन मातृभाषा म ५ कक्षासम अथवा प्राथमिक कक्षासम पढ्न पैना कै राखल यी हमार समस्त थारु लगायत अन्य जानजाती गोचालिन देहलक दबाब के नीति हो । हमन ५ कक्षासम केल का कर आइ ए, विए, एम.ए सम्म थारु भाषहँ ऐच्छिक विषयमन पढ्न पैना व्यवस्था हुईक परल, उह अनुसार हुकहनक रोजगारी के व्यवस्था फे कर परल तब न उ भाषा के महत्व व मान्यता रही । हमन हन एकथो अल्फाइक लिय , संविधानम लिखल बा । ओहीहन व्यवहारीक रुप दिहक लाग त और खस भाषाक लाग जत्रा सरकारी बजेट अल्गाजाईठ और भाषक लिय फे ओत्रहँ बजेट अल्गाईक परल । तर यी राज्य संचालनहुक एक्को नि कर्ल हुईट । याकर लाग हम्र जोरदार रुपम आवाज उठाई पर्ना बा । यी नै कर स्याकब कलसे थारु भाषा अस्तहे थिचो मिचोमन पल रही ओ हमार भाषाके अवस्ता दिन-दिन कमजोर बन्ती जाई कना हमार सोच हो ।

◆

गोचालीक ऐतिहासिक झलक

प्रबन्ध निर्देशक
जग्गु प्रसाद चौधरी (भगोरिया)

संक्षिप्त चर्चा

नेपाल बहुजाति, भाषा धर्म संस्कृति परम्पराले झरल देश हो । यी देशमा बसोबास कर्ना धेर जातजातिमसे थारु फे एक हुइवी । प्रत्येक जातिके आपन धर्म, संस्कृति, परम्परा रितीरिवाज, संस्कार, भेषभुषा रहनसहन बोलीभाषा साहित्य आदि । आपन किसिमके रहथ । ज्याकर संरक्षण सम्बर्द्धन तथा विकास कर्ना उह जातिके विशेष दायित्व फे रहथ । ओस्तहँ दायित्व समझके थारु जातीके कुछ, पहल लिखल युवा हुँक आपन भाषा तथा साहित्वके संरक्षण सम्बर्द्धन तथा विकास कर्ना सोंच बनाक थारु भाषाम फे किताब, पत्रिका छपाए परल कर्ना विषयम छलफल करक लाग वि.स. २०२८ साल बैशाख १ गते दाङ जिल्लाके नारायणपुर गा.वि.स. स्थित धपघटवा कना कुल्वाके मुरा (बाँध) म बनभोजके आयोजना कर्ल, ओ थारु भाषामा छपैना पत्रिकाके नाउँ का धर्ना कन्य विषयम छलफल करबेर सक्कुनके मनमिल्ना शब्द "गोचाली" म सहमत हुइलन । काकर कि गोचाली कना शब्द थारु समाग़म एक दम लोकप्रिय बा । सक्कुनके हितैषी घनिष्ठ, समुन्द्र जसिन गहिंर , पर्ववा जसिन ढवांग, निश्छल, निर्मल, पवित्र आत्मिय भित्रके रुपम गोचाली छन स्वीकार गैल । उह ओसै गोचालीक जन्म अर्थात स्थापन्य बैशाख १ गते दिवसके रुपम वनभोजके आयोजना कैक मनैना चलन चलल बा ।

थारु समाजके पहल लिखल (विद्यार्थी) युवा हुँक आब आपन भाषाम गीत, कविता, कथा, निवन्ध, लेख, नाटक, आदि लिखना तथा शुक्क दिन एक ठाउँम जटह आपन रचना सुनैना व बातचित फे कर्ना काम कर्ति गैल । प्रत्येक युवकनम लौव जोश, जांगर, चिन्तन, तर्कपूर्ण तथा विवेकशील भावनाले भरल साहित्यके रचना कर्ना क्षमताके विकास हुइती गैल । थारु भाषाम साहित्यिक सृजनाके अनेक रङ्गी चङ्गी फूलाफुल्ती गैल ओ सृजनाके क्रमम समाजम र हल अन्धविश्वास, कुरीति , शोषण, दमन, अन्याय, अत्याचार, छुवाछुत, जातिय भेदभाव, जसिन खराब पक्षके विरोधम आपन साहित्यिक कलम चलैती गैल । ज्याकर फस्वरुप समाजम जनचेतनाके लहर फैलना शुरुवात हुइनाके साथ साथम रचनाफे संकलन हुइती गैलन । संकलित रचनाहन किताबके रुप देना विषयम छलफल करकलाग २०२८ सालके दशीयक शुअवसरम दाङ बैवाङ्गम दाङ, बाँके, बर्दिया, कैलाली, कञ्चनपुरके थारु भाषा तथा साहित्य प्रेमी हुकनके भेलासे सबसे पहिल थारु भाषा तथा साहित्य सुधार समिति पश्चिमाञ्चल नेपाल गठन कैं गैल रह, ज्याकर मुख्य हस्ती के रुपम श्री सगुन लाल चौधरी, श्री महेश चौधरी, श्री भगवति चौधरी, श्री टेक बहादुर चौधरी, श्री लाल बहादुर चौधरी, श्री अशोक चोधरी, श्री अरविन्द चौधरी रलह । यीह

समिति मार्फत सबसे पहिल "हमार कहाई" कना अपिल छाप गैल रह जेहीम थारु भाषा तथा साहित्यके उत्थान ओ विकास के लाग आह्वान कैं गैल रह ओ सहयोग (मदत) के अपेक्षा फे कैं गैल रह । उह वर्ष थारु भाषाम सबसे पहिल गोचाली पत्रिका प्रकाशन कैं गैल ज्याकर प्रधान सम्पादक दाङक श्री महेश चौधरी रलह । गोचाली पत्रिकासे पहिल नेपालम थारु भाषाम कौनो फे पत्रिका प्रकाशन नै हुइलक ओर्से गोचालीहन थारु भाषा साहित्य विकासके सूत्रपात करुइया पहिला (जेष्ठा) पत्रिकाके रुपम स्थान देगैल वाट । यी पत्रिका प्रकाशनके विषयम लिखबेर श्री नारायण प्रसाद शर्मा दाङ (वर्गल्दि) हन फे नै विस्राय सेक जाई काकर कि उहाँ थारु समाजहन सुषुप्त अवस्थासे जगाके चेतनशील अवस्थाम पुगाइकलाग जौन प्रेरणा देल उ थारु समाजके लाग बहुत महत्वपूर्ण बा । प्रेरणा स्वरुप उहाँके कविता असिन बा –

आग बढो आगो बढो, आग बढ्ना हो,
हम्र फे त मनै हुइती आग बढ्ना हो ,॥१॥
सक्कु मनै आग गैल, हम्र पाछ हुइली,
आग बढी काम करी, नैत हम्र गैली ॥२॥
सक्कु मनै चतुर हुइल थारु गोंगा हुइली,
खैना पिन्ना पत्ता नै हो, भुख हम्र मुती ॥३॥
आग बढो जिन डराओ, लौसे ज्या ज्या परी,
जित्ति मुअल असक हम्र बाटी, लौसे मुअ परी ॥४॥

बास्तवम कना हो कलसे गोचाली केवल साहित्यिक रुपम केल नै हो एक सशक्त प्रगतिशिल अभियान फे फूला फुलाके साहित्य दर्पणहन झकी झुकाउ,सुन्दर, मनमोन, आकर्षक बनैती शोधित, पिडित जनतनम चेतनाके लहर फैलाके जाली, फटाहा, शोषक, सामन्त हुकनसे जुझना डगर देखुइया अगहवा फे बनल । उह ओसै थारु समाजम गोचाली प्रतिके आस्था, विश्वास, माया ओ ममता बहुत गहीर बन्ती गैल ओ थारु समाजके एक लोक प्रिय गोचाली (मित्री) के रुपम गोचाली स्थापित हुइल । आपन समाजके मैगर सन्देश बोकके आघवर न्यागवेर गोचालीहन बहुत दुःख, सासत सह परलिस । तब फे गोचाली सब किसिमके बाधा व्यवधानहन हटैटी आघ बह्ती गैल । दाङ्गाली जाली जमिन्दार तथा पञ्चायती कालरात्रीके महादानव हुँक गोचालीके लोक प्रियतानह देख्के विह्र मुअल रलह । ज्याकर कारण गोचालीके कार्यकर्ता हुकन अनेक बहानामा झुट्टा मुद्दा लगैना, पक्राउ पूर्जी कट्ना, जेल सजाय, मानसिक तथा शारीरिक यातना देना काम राज्य पक्षसे हुइल । उह क्रमम गोचालीके संस्थापक प्रगतिशील लेखक तथा कुशल संगठन कर्ता श्री सगुन लाल चौधरी कैलालीके कारागारम एक वरष जेल जीवन वितैल, श्री तुल्सी चौधरी नेपालगञ्ज कारागारम यातना सह पर्लन, श्री टिकाराम चौधरी के नाउँम पक्राउ पूर्जी काट गैल । अस्तहँके गोचालीके और सदस्य हुकनफे अनेक किसिमके मानसिक यातना सहपर्लिन । गोचालीहन निर्दलीय पञ्चायती (प्रजातन्त्र) व्यवस्था विरोधी कैं गिल । ज्याकर कारण गोचालीके दोश्रा अंकथेसे गोचाली उप्पर तानाशाही पञ्चेसरकार प्रतिवन्ध लगाइल । राज्यक उ दमनसे गोचालीके कार्यकर्ता हुकनम कुछ शिथिलता अैलिन तभु फे नुक छिपके गोचालीहन मलजल देक वचैना काम हुइती रहल ।

गोचाली पत्रिका प्रकाशनके ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ध्यारबेर यहीहन आग बह्राइक लाग धेर से धेर थारु साहित्यकार हुकनके योगदान रहल देख जाइठ् । जेहीम श्री महेश चौधरी जी

के कलम सबसे धेर चलत देख जाइथ । उहाँके कलमसे कथा, कविता, नाटक, लेख, निवन्ध, लोक साहित्य माँगर, झुमरा गरुवावक जल्मौती आदि रचना कै गैल बाट । अस्तहँ श्री भगवति चैधरी म्वार विन्ती, सुधार, पाछेओर, थारुनके घर, हमार संस्कृति रचना कैक गोचालीहन सहयोग कर्लबाट । श्री सगुन लाल चौधरी -थारु भाषा तथा साहित्य सुधार समितिके एक सशक्त संगठन कर्ताके रुपम चिन्हम जैथ । उहाँके कलमसे किसानके ऐतिहासिक झलक, दाङ्गसे बुढान), हम्र ओ हमार समाज, थारु संस्कृति "चतुर्थपुष्प मगमगैना वास लिहबेर, थारु साहित्यके रुपरेखा, शहीद मोहन बहादुर चौधरीके छोटकरी क्रान्तीकार्य जीवन परिचय , विहानके अजरारम नजर दौराइबेर, बर्दियाके वर्ग, मै कौन देवता के पूजा करु ? जोगनी, गोचालीक आह्वान, कमैया मुक्ति शोषण कर्ना लौव जुक्ति क रचना कर्ल बाट ओस्तहँक डा. नेत्रलाल पौडेल (अभागी) हमार हृदयम सद्द बाचल रहही अस्तहँ श्री लाल बहादुर चौधरी मोर दाई, मै आइकलाग बाटुँ कना कविता लेक उपस्थिति हुइल । श्री वामदेव शर्मा *भ्रम* के दाङ्के गोचाली टुह ओ मै के रचाना कैक गोचालीहँ आघ बहैनाम सययोग कर्ल । श्री गिरीराज शर्मा, लक्ष्मण गौतम, श्री फुलराम चौधरी, श्री विश्वराज शर्मा, श्री रुपमान चौधर ी, श्री टीकाराम चौधरी, श्री कृष्ण प्रसाद चौधरी, श्री के.पी. चौधरी, श्री मोती चौधरी, श्री रामचरण चौधरी, श्री गणेश चौधरी, श्री अरविन्द चौंधरी, श्यामेश चौधरी, अशोक थारु, शेरबहादुर चौधरी, श्री जीत बहादुर चौधरी, भागीराम चौधरी, थलिराम चौधरी, बन्धुराम चौधरी, सुश्री मिना आदि साहित्य प्रेमी हक्रनके १/२ थो रचना प्रकाशित कैक फे गोचालीहन सहयोग कर्लबाट । गोचाली अंक २ म प्रकाशित बठबाके जोर्नी शिर्षकम कैलाली वैचनपुर निवासी श्री गोवरधनदास चौधरीक सृजना सर्वाधिक चर्चामा रहल इतिहास बा । काकर कि उ सृजना छपैलक कारण जेल यातना भ्वाग परल रलहिन । जौन सृजना आसिन बाट-

हरवा मै सौपु धरतीया रे,
धरती फल पैबुँ ।
वियवामै सौपुँ रे धरतीया,
धरती फल पैबुँ ॥१॥
जानी बुझी जोत्यो भइया रे,
राज गोरखाली,
चाँदी लदल भुइयाँ बाट,
पोतवा बहुत परी ॥२॥
एक सैअसी पोत दिहनु रे,
जहान लैके भगनु,
रजवक पुतारे उजीर सिंह
पतुरि लैके गाज ॥३॥

अर्थात् गारखाली राजमसे सतावा पाक द्वासर ठाउँ भग्लक भाव यी सृजनासे झल्कथ । सुगौली सन्धीसे पहिल बाँके, बर्दिया, कैलाली ओ कञ्चनपुर जिल्ला भारतके अधिनम रहल व्याला कवि श्री बठवा थारु गोरखाली राजम धेर दु:ख पैलक ओ भूमिके पोत धेर होक तिर नै सेकके द्वासर मुलुकम छारा कैक गैलक बाट यी सजना गीत से झल्कथा । अस्तहँ कवि श्री केशव बहादुर चौधरी बर्दिया (ढेलफुकनी) द्वारा रचित आजुक सजना लौव सजना फे उह समयके चर्चित सजना हो ।जौन सजनामै कवि कहल बाट -

चारी ओर्से घेरल पर्वतवा रे, माझ बिच जनता,
उठो जनता राइफल तरवाल लेक, फटहनसे लरी ।

अर्थात् अन्याय अत्याचारके विरुद्ध जनता हुकन संघर्षम उत्रक लाग आह्वान कै गैल रह । ओस्तहँके कवि श्री नेत्रलाल पौडेल(अभागी) ज्यू से फे गोचाली पत्रिका हन धेर प्रेरणा मिल्लक बात इतिहासमसे झल्कथा उहाँके मै का गीत गाउँ कविता आदि उल्लेखनीय बाटीन । कथाकारके रुपम श्री टेक बहादुर चौधरी दाङ्ग सिसहनीया उपस्थित हुइलबाट ।उहाँ के पाप शिर्षकके बत्कोही, प्रतिज्ञा कना कथा बहुत मार्मिक बाटीन ।

पञ्चायती कालरात्रीम ज्या जसिन समस्या पर्लसे फे गोचाली जार, घाम, शितलपानी, जेलनेल सब मेरिक यातना सहती आग बढ्वी गैल । समाजम रहल सक्कु किसिमके शोषणके जालहन चिरकन फँक्ना ओ शोषण रहित समाजके निर्माण कर्ना परि कल्पनाके उद्देश्यलेक २०२८ सालम स्थापना हुइलक गोचाली विभिन्न बाधा व्यवधान पारकर्ति बहुदलीय व्यवस्था के पुनः स्थापना सम पुग्ना सफल होके थारु भाषा तथा साहित्यके महत्वहन पक्का फे बढैलक हो । गोचालीक प्रभावले नेपालम हाल धेर से धेर थारु भाषाम पत्रिका प्रकाशित हुइती बाट । असिकन थारु भाषाके साहित्यिक फँटवम लौव-लौव सृजनाके विभिन्न रंगके फूला फुल्ना बहुत खुशीके बात हो । वि.स. २०४६ साल चैत्र २६ गते नेपालम बहुदलीय व्यवस्थाके पुनः स्थापना पश्चात पञ्चायती कालरात्रीम छिन्नभिन्न अवस्थाम रहल गोचालीम खुशीके लहर छाइल । थारु भाषा साहित्य प्रेमी हुँक आपन आपन साहित्यिक प्रगतिशिल प्रतिभा लेक गोचालीम आवद्ध हुइना क्रमके लहर चलल । उह लहरम लौव लौव कवि, लेखक, कथाकार, निवन्धकार, नाटककार आदि देखा पर्ल । जस्त- कवि श्री हरि प्रसार चौधरी "शोषक जीउ खैटी बा" कना कविता लेक उपस्थित हुइल-

जन्नी देख्बो डट्करल बा ।
चिथ्रा लागल लुगरा बा ॥
खैना बासी माँड बा ।
शोषक जीउ मोर खैटी बा ॥

यस्तके नरेश गोचाली फे आपन जीवनम दु:ख हुइलक कविता लेक उपस्थित हुइल बाट ।आपन प्रतिभालेक उपस्थित हुइलक अन्य साहित्यकार हुक्र श्री रमण चौधरी (युवा जोश कविता) , के.पी चौधरी आग बही गोचाली), ललित कुमार चौधरी (स्वागत गीत), गरीव चौधर ी- (एकतके आह्वान), भागवाते चौधरी (किसानके व्यथा), अशोक चौधरी (उ असिक बाँचता), मान बहादुर चौधरी (दु:खी जरम करम), लक्ष्मण चौधरी (हमार दशा), टे.वी. चौधरी (नै लर्के नै दुई), पतिराम थारु (उठो गोचाली), खुशीराम चौधरी (अधिकार),राम लौटन चौधरी (गोचालीहयी सन्देश), जीतराम चौधरी(किसानके जीवन), शिव चरण चौधरी (सक्कुजन एक जुट हुई), श्याम चौधरी (गीत), ललित चौधरी (लड्कनके इच्छा), अन्जान (थारु जागट), गुरु प्रसाद चौधरी (थारु पाछ हो गैली), मंगल प्रसाद चौधरी (ग्वाबर के काही,लिह परल अछिन्क अधिकार), धरम चौधरी (किसानके बिलौना), मोती कुमार चौधरी (शुभकामना, जनआन्दोलनह बुझना सवाल), कृष्ण कुमार चौधरी (कन्है, आत्म संभान, सांसदजी हुक), विष्णु चौधरी (उ फेर आइती बा), राजेन्द्र धिताल (थारु तुहाँर), तुला चौधरी (चौकस ओ चम्पन्न समाजक लाग युवा शक्ति), कृष्ण राज सर्वहारी (शहिद, दु:ख स्वयम अपनम), नरेश गोचाली (अनुरोध) बेचु लाल चौधरी (थारु जातीके परिचय), लक्ष्मण चौधरी (माघे ओ मनै), कृष्ण प्रसाद चौधरी (मै का

लिखुँ ?), भागीराम अगलपठावा (युवा वर्ग हुक्नके भूमिका), लक्ष्मण दङगौरा (हमार समाज हमार जिऊ), राम गुलाम चौधरी (अत्कचरा प्रेम), जीत बहादुर चौधरी (अभागी पहुँना), सञ्चु भैया (अस्तित्व), जोखन रतगैंया (दाग,गोचाली शुभकामना तुहिनहे), दुर्गा प्रसाद चौधरी (सगुन लाल चौधरीक छोट चिनारी), दयाराम खड्का (मुक्त कमैया पुनः स्थापना समस्या ओसमाधान), जगणु प्रसाद चौधरी (स्वागत गीत,कन्है,रुपक प्रेम प्रतिज्ञा, कमैयक जीन्दगी,प्रिया गोचालीह म्वार बधाई,जैविर व गरिबे,आधुनिक धोक्रा गीत), भीम बहादुर चौधरी (जीवनी) कविराम थारु (युवक हुक्न सन्देश, वीरताके निशान देखा देव, लोकतान्त्रिक गणतन्त्र लानक छोर्ना बा)

उठो हो जनता उठो- गाउँ गाउँसे जुटो
(गाउँ गाउँसे उठो जनता)[२] उठ पर्ना बा
लोक तान्त्रिक गणतन्त्र लानक छोर्ना बा ।
लोकतान्त्रिक गणतन्त्रम (जातीय स्वशासन)[२]
संघीय सरकार रही (केन्द्रसे सञ्चालन)[२]
(बाहुनवादी अंहकार टुर पर्ना बा)[२]
लोकतान्त्रिक गणतन्त्र लानक छोर्ना बा
हो लोकतान्त्रिक गणतन्त्र लानक छोर्ना बा ।

दासताके जंजीर टुरटी (कमैया दादु उठो)[२]
चुल्ही चौका छोरकन (भन्सहरी भौजी जुटो)[२]
(थारुवान प्रदेशम सत्ता चलाई पर्ना बा)[२]
लोकतान्त्रिक गणतन्त्र लानक छोर्ना बा
हो, लोकतान्त्रिक गणतन्त्र लानक छोर्ना बा ।

महान वीर शहीदके (सपना पुरा करक लाग)[२]
गरीबके वस्तीमन (लाल झण्डा गारक लाग)[२]
(शामन्ती राजतन्त्र ध्वस्त पर्ना बा)[२]
लोकतान्त्रिक गणतन्त्र लानक छोर्ना बा
हो लाकतान्त्रिक गणतन्त्र लानक छोर्ना बा ।

वास्तवम कना हो कलसे यी कविता बहुत समय सापेक्ष बा । जौन कवितामं कवि जी प्रत्येक शोषित पिडित जनता हुकन लोकतान्त्रिक गणतन्त्रके संघर्षम लागक लाग आह्वान कर्ल बाट । गोचाली पत्रिकामा और भाषासे अनुवादीत रचना फे गोटगाट रहल बाट शान्ति चौधरीक रोटीक बत्कोही , दुर्गा प्रसाद चौधरीक स्वातन्त्रता, जगगु प्रसाद चौधरीक जब जनजातिके दोहलो काह्र जाइथ आदि । असिकन थारु साहित्यकार हुकनके विषयम लिखबेर फेक्रो नाउँ छुट्गैल कलसे वाकर लाग क्षमा चाहतुँ काकर कि संकटकालम हमार धेर से धेर गोचाली पत्रिका गायब हो गैल उहा ओर्से श्रोत साधनके अभावसे छुटस्याकथ ।

बहुदलीय प्रजातन्त्रके पुनःस्थापना संग गोचालीम लौव जोश जांगरके साथम प्रतिभा विकासके लहर आइल जौन लहरके प्रतिफल स्वरुप २०४७ सालसे २०५१ साल सम गोचाली अंक

छ से अंक १ सम नियमित प्रकाशित हुइना सफल हुइल । गोचाली संगठन विस्तार कैक गोचालीक कार्यक्रम नेपाल अधिराज्यभर बसोबास कर्ना थारु समुदाय विचम संचालन कर्ना उद्देश्य लेक थारु भाषा तथा साहित्य सुधार समिति पश्चिमाञ्चल हन थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान मञ्च नेपाल(गोचाली परिवार २०२८) के नाउँसे नेपालके राजधानी काठमाडौमा मिति २०५३/७/१२ म दर्ता कै गैल ओ संगठनके सम्पर्क कार्यालय धधवार गा.वि.स. वडा नं. ३ कतर्निया, बर्दियाम राख गैल । नयाँ केन्द्रिय समिति तर लिखल बमोजिम गठन कै गैल-

१. अध्यक्षः- श्री महेश चौधरी	दाङ्ग
२. उपाध्यक्ष :- श्री सगुन लाल चौधरी	बर्दिया
३. महासचिव :- श्री जग्गु प्रसाद चौधरी	बर्दिया
४. सचिवः- श्री कृष्ण कुमार चौधरी	बर्दिया
५. कोषाध्यक्षः- श्री जीत बहादुर चौधरी	बर्दिया
६. सदस्य :- श्री भगवति चौधरी	दाङ्ग देउखर्य
७. सदस्य :- श्री मंगल प्रसाद चौधरी	दाङ्ग
८. सदस्य :- श्री मान बाहादुर चौधरी	सुर्खेत
९. सदस्य :- श्री कष्ण बहादुर चौधरी	सुर्खेत
१०. सदस्य :- श्री भीम बहादुर चौधरी	बर्दिया
११. सदस्य :- श्री रुप लाल चौधरी	बर्दिया

सल्लाहकार समिति

१. श्री अशोक चौधरी	दाङ् (किसान नेता व बुद्धिजीवी)
२. श्री कैया चौधरी	कैलाली (राष्ट्रिय सभा सदस्य)
३. श्री टीकाराम चौधरी	बर्दिया (समाजसेवी)
४. श्री कृष्ण प्रसाद चौधरी	बर्दिया (पूर्व अध्यक्ष गोचाली परिवार)
५. श्रीमती जग मोहनी चौधरी	(अध्यक्ष बेस महिला जागरण केन्द्रीय समिति)
६. श्रीमति शान्ति देवी चौधरी दाङ्ग	(अध्यक्ष, ग्रामीण महिला विकास संस्था)
७. डा. डोण प्रसाद रजौरिया दाङ्ग	(थारु विज्ञ)

संगठन विस्तारके क्रममा गोचालीक जिल्ला संगठन बाँके, बर्दिया, कैलाली, कञ्चनपुर , दाङ्ग ओ सुर्खेत गठन कै गैल बर्दियाम श्री दुर्गा प्रसाद चौधरीक अध्यक्षयताम, दाङ्गम श्री मंगल प्रसाद चौधरीक अध्यक्षताम, कैलालीम श्री जोखन चौधरीक अध्यक्षताम, कञ्चनपुरम श्री दुर्गा प्रसाद चौधरीक अध्यक्षताम, सुर्खेतम श्री कृष्ण बहादुर चौधरीक अध्यक्षताम ओ बाँकेम जीत बहादुर चौधरीक अध्यक्षताम गठन कै गैल । असिकन संगठन बनाके थारु भाषा साहित्य क्षेत्रम काम करबेर गोचालीम जौन जोश जांगर उत्साह रह उ सद् उह गतीम निरन्तर आग बढ नै स्याकल । वाकर विभिन्न कारण बाटिस ।नेपालम २०५२ साल फाल्गुन १ गते से नेपाल कम्युनिष्ट पार्टी (माओवादी) क नेतृत्वम घोषणा हुइलक जनयुद्ध नामक शसस्त्र द्वन्द्वक दौरानम विद्रोही पक्षहँ दवैना बाहनाम सरकारी पक्षसे जनता उपर कैगैलक व्यापक दमन पक्राउ, शारिरिक तथा मानसिक यातना, हत्या बलात्कार, झुट्ठा मुद्दा, प्रहरी हिरासत, जेल सजाय, नागरिक ,बेपत्ता पर्ना जसिन घृणित कार्यसे गौचाली फे बाँकी नै रहल । उह ओर्से गोचालीक ११औं अंक २०५४ सालम केल निक्र स्याकल । अस्तक गोचाली अंक १२, २०५६ मा प्रकाशित हुरल, ज्याकर

पुष्ठ आकर्षक जातिय स्वशासनक व थारु मुक्तिके प्रश्न, दाङ्के भाषा व साहित्यके छोटी चिनारी २३ । देशम द्वन्द्व चर्कीत गैल । द्वन्द्वके भीषण वम आरुदके वर्षाके कारण देश अशान्तमय भावम फँसल ज्याकर कारण गोचालीहन आग बढ्ना बहुत कठिन हुइल । छेग्रहवा, गयरावा, भैंसरवा, कमैया, कम्हलरी, भरिया, मज्दुर, किसान, विद्यार्थी, शिक्षक जसिन तमाम निर्दोष जनताहुकन प्रहरी प्रशासनके चरम यातना सह परल ।असिन यातनापूर्ण वातावरणमफे साहसके साथ गोचाली अंक १३ प्रकाशित हुइना सफल हुइल । जौन अकम प्रकाशित कविता "गोचाली शुभकामना तुहिनहे" प्रशान्त बहुत प्रगतिशील ओ क्रान्तिकारी बा । जस्त-

वर्षौं बर्षाके दासताके जन्जीरहे तुरना महान लक्ष्य लेके,
शोषण,दमन अन्याय अत्याचारके पीडामय कथा व्याथा साँचके,
सुखल पखबा मानिक वसन्तके उम्रल टुसा हस मुक्ति योद्धा होके,
वर्षा मनिक पानीके मोहरा हस कोन्वा कोन्वमेस मुक्ति योद्धा जरमके,
वर्गीय असमान्ताके करिया बदरी फटाईकतन आँधी बेलुन्दर बनके,
वर्ग बैरीक लुटके स्वर्गहिं खतम पारकलाग चटयाङ्ग बनके,
अलमल परल व्यालामे न्याय ओ मुक्तिक तगरा दिया बरती,
रोग, शोक व शोकसे पीडित जन कविलाहे वर्ग युद्धके पाठ सिखैती,
तमाम बाधा अडचन, चुनौती से जुझटी अइना हमार गोचालीहुकन
शुभ कामना तुहिनहे। ....

अस्तहँ कवि अन्जानके "थारु जागट" कना कविता फे ओस्ट क्रान्तिकारी भावना से खचाखच भरल ओ लोकतान्त्रिक गणतन्त्रके पक्षम वा

मोहन, धनी, जुनाके तत्ल रकत पिउइयन ।
टेक,गुरु, सौखुके मास खाक जिउइयन ॥
गाउँ गाउँसे जनता उठगैल बढला लिह ख्वाजट ।
शामन्ती सरकार फँकाक गणतन्त्रहन र्वाजत ॥

२०५८ सालम संकटकालब घोषणा हुइलथेसे नेपालके नागरिकनके सक्कु मौलिक हक अधिकार हरण कै गैल । कत्रा मनैनके ज्यान गैल कत्रा वेपत्ता हुइल कौनो सहीद ओकर लेखाजोखा नै हो । गोचालीक कार्यकर्ता उप्पर फे प्रहरी प्रशासन तथा सैनिक प्रसाशनके आक्रमण हुइल । परिणाम स्वरुप थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान मञ्च नेपाल (गोचाली परिवार २०२८) के संस्थापक बुद्धिजीवी प्रगतिशील लेखक तथा कुशल संगठन कर्ला श्री सगुन लाल चौधरी, केन्द्रीय सदस्य श्री भीम बहादुर चौधरी, श्री रुपलाल चौधरी, बेद प्रसाद चौधरी,कष्ण प्रसाद चौधरी, शिव चरण चौधरी लगायतके कार्यकर्ता हुक्रन वेपत्ता पर्ना काम हुइल कलसे जोखन चौधरी (कैलाली), चित्र बहादुर चौधरी कैलाली, जगत चौधरी कैलाली, धनीराम चौधरी बर्दिया, पुष्प राज योगी बर्दिया, मंगल प्रसाद चौधरी कैलाली लगायतके गोचाली हुकन बेपत्ता पार गैल बा । असिन किसिमके अमानवीय, निन्दनीय, घृणित तथा अप्रजातान्त्रिक काम तत्कालीन राज्य पक्षसे हुइना देशवासीके लाग अन्ज्यादी कष्टमय, पिडादायी ओ असहय बनल । हमार गोचाली जहीयाफे असिन घृणित कार्यके विरोधम आपन साहित्यिक कलमके निप तिस्लार वनैती आइलक इतिहास बा । गोचालीम केवल जातिय भाषिक माया केल नै होक वर्गीय माया बा । जहियाफे शोषित, पिडित गरीब किसान कमैया, मजदुर, जसिन श्रमजीवी जनता हुकनके जायज मागहन समर्थन कर्ना गोचाली और (द्वासर) जाति, भाषा, धर्म समुदायसे समधुर सम्बन्ध

स्थापित रख्ती आइल आइल बा । संकटकालेक विषम परिस्थितिम गोचालीक संस्थापक केन्द्रिय सदस्य, जिल्ला सदस्य तथा शुभ चिन्तक थारु नागरिक हुक्रनके बेपत्ता हुइलक दुःखद घडीम शोकाकुल अवस्थाम गोचाली पत्रिका प्रकाशन कर्नाम कुछ ढिलाई हुइलसे फे उहाँ हुक्रनके सम्झनाम शीर झुकैती ओ फे दोश्रा आपन आत्माहन बलार बनैती उहाँ हुक्रनके देखाइल प्रगतिक डगरम आग बढ्ना कसम खैतीं गोचाली पत्रिका अंक १४, २०६३ सालम प्रकाशित हुइना सफल हुइल ।

हमार गोचाली आग बढ्ना क्रममा विविध बाधा अड्चनके कारण दर्ता नविकरण कराय नै स्याकल ज्याकर कारण समाजम संगठनके रुपमा केल स्थापित बा । ज्या जसिन हुईलसे फे गोचाली प्रगतिशिल साहित्यिक फँटवम लौव-लौव फूला फुलैती निरन्तर आग बहटी बा । अस्तहँ मजा कामके विजारोपण कर्लक ओर्से रमेश विकलसे स्थापना करल युद्ध प्रसाद मिश्र स्मृति पुरस्कारसे गोचाली २०५० साल फाल्गुन ६ गते सम्मानित हुइल बा । साम्मान स्वरुप प्रशंसा पत्र ओ नगद रु ५०००।- पाँच हजार प्राप्त कर स्याकल बा । गोचालीक प्रगतिशिल सृजनाके मूल्याङ्कन कैक गोचालीहन प्रशंसा पत्र सहित पुरस्कृत कर्लकम युद्ध प्रसाद मिश्र स्मृति पुरस्कार समिटिहन हयार तर्फसे उक्त गुठीक उत्तरोत्तर प्रगतिक कामना सहित मुरी मुरी धन्यवाद बा । गोचालीम सशक्तिकरण पैदा करैना उद्देश्यलेक अनौपचारिक क्षेत्र सेवा केन्द्र (इन्सेक) बर्दिया से २०६२ सालम कार्यालय व्यवस्थापन करक लाग स्टेशनरी सामान ओ नगद कैक करीब बीस हजार रुपैया बराबरके सहयोग मिलल । याकर लाग हमार गोचालीक ओरसे अनौपचारिक क्षेत्र सेवा केन्द्र (इन्सेक) बर्दियाहन धन्यवाद दिह चाहटी ।

आजके वर्तमान अवस्थाम नेपालम लोकतान्त्रिक गठबन्धन सरकार बनल बा । असिन सरकार बन्ना अवसर लानक लाग नेपाली जनता हुक्रनके अंश अंशके लगानी बा । वीर शहीदनके रगतले देशके इतिहास लिख्ना क्रम जारी बा । वीर सपूतनके सपना पूरा कर्ना जिम्मा हमार कँध्यम आइल बा । लौव नेपाल के भावि रेखा कोर्ना संविधान सभाके निर्वाचनके विषयम सभा जुलुश, रेडियो, टि.भि., पत्रपत्रिकामह चर्चा परिचर्चा चलल बा। राजनैतिक दलहुँक्र आपन चुनावी घोषणा पत्र लेक चुनावी अभियान सल्बलाइल बाट ।तर जनयुद्ध कालसे लेक जनआन्दोलन भाग २ के समयम बेपत्ता पार गैलक नेपाली नागरिकके स्थिति सार्वजनिककर्ना , हत्या कै गील पीडित परिवारहँ न्याय देना विषयम लोकतान्त्रिक गठबन्धन सकार मौन रहल बा । लोकतान्त्रिक गठबन्धन सरकार द्वन्द्व कै दौरानम मानवता विरोधी अपराधम संलग्न दोषी हुक्रन कार्वाही कर्ना नै चाहथ ? का आसिन अवस्थाम बेपत्ता नागरिकनके परिवार खुशी दिलले संविधान सभाके निर्वाचनम सहभागि हुई सेकही ? गोचालीके तर्फसे लोकतान्त्रीक कना सरकार हन यी प्रश्न बा । मही लागथ पक्का फे अैसीन आवस्थाम पीडित परिवार संविधान सभाम भाग लिह नै सेकही । उह ओसे देशके भावि संविधान बनाइक लाग सक्कु नागरिकन खुशी दिलले भाग लेना वातावरण बनैना हो कलसे वेपत्ता नागरिकनके स्थिति सार्वजनिक तथा सक्कु पीडित परिवार हुकन उचित क्षति पूर्ति दिह परल कना गोचालीक जोरदार माग बा ।

यीह माग कर्ति तित मिठ सल्लाह सुझावके लाग आशा ओ विश्वास कर्ति बाँकी वात पाछक लाग संच्ती कलम बन्द कर्ना अनुमति चाहँतु ।

"जय गोचाली परिवार"

नेपालम संविधानसभा

-मोती कुमार चौधरी
धधवार ९ बर्दिया ।

संविधान सभा कलक का हो ?

संविधान सभा कलक देशक मूल कानून अर्थात संविधान बनाईकलाग जनता हुँकनसे चुनगैलक प्रतिनिधि हुँकनक एक ठो सभा हो । नेपालक सन्दर्भम दलित, जनजाति, महिला, मधेशी आदि सक्कु जाती, वर्ग, क्षेत्र के जनतन हुकहनक निश्चित अंशहन प्रतिनिधित्व कराक देशक संविधान बनैना कचहरीहँ संविधानसभा कहजाइठ । यी सभाम लौव संविधान तयार कर्ना उद्देश्य लेक बैठक बैठना हुइल ओर्से देशम रहल तमाम उत्पिडित जाति, जनजाति, वर्ग लिंग , सम्प्रदाय, क्षेत्र आदि समुदाय हुँकन उचित प्रतिनिधित्व करैना बहुत जरुरी बा ।

'संविधानसभा कलक कौनो देश वा राष्ट्रक संविधान बनैना निर्वाचित प्रतिनिधिहुँकनक सभा वा विधायिका हो'- नेपाली शब्दकोष

'संविधानसभाके प्रश्न कौनो सर्वहारावादी कार्यक्रम वा नारा नै होक विशुद्ध पूँजिवाद-जनवादी कार्यक्रम वा नारा हो'-डा. बाबुराम भट्टराई माओवादी वरिष्ट नेता

'संविधानसभा बन्ना संविधानम जनताहुँकनक आत्मा के बास रथा व जनताहुँकनक भावना बोल्था ।'- डा. अम्बेकडर

संविधान सभाक हावा बहलक ५७ बरष

भारत (छिमेकी मुलुकम) भर्खर स्वतन्त्र हुइल रह । यहाँ फे नेपालम जहानियाँ हुकुमी राणाशासनक विरुद्धम जनता आपन मुक्तिकलाग जनक्रान्ति कर भिर्ल । ठीक्क उह व्याला क्रान्तिहँ कमजोर पारकलाग एकठो लौव कानुनक घोषणा हुइल । उ कानुन 'नेपाल सरकारक वैधानिक कानुन २००४ नाउँसे घोषणा हुइल । उ नेपालक पहिला कानुन (लिखित) रह । २००५ साल बैशाख १ गते लागु हुइना कहती कहटी आन्तरिक कलहके कारण लागु नै हुइ स्याकल ।

नेपाली जनता हुँक्र आपन मुक्तिकलाग लम्मा समयसे आन्दोलनरत बाट । २००७ सालम निरकुश जहानिया राणा शासनके विरुद्धम जनक्रान्ति हुइल । २००७ साल चैत्र २१ गते अन्तरिम शासन विधान स्वीकृत हुइल ओ चैत्र २९ गते से लागु फे हुइल । यी विधानक प्रमुख उद्देश्य संविधानसभाक निर्वाचन करैना रलहस तर ट फ्यारासम संशोधन कराक फे संविधान सभाक निर्वाचन कराए नै सेक्लक कारण तत्कालिन राज्वा त्रिभुवन २०१० साल माघ २२ गतेक दिन सम्पूर्ण संवैधानिक अधिकार रज्वकम निहित हुइलक घोषणा कैक अन्तरिम विधान २००७ सालके मुलमर्म समेत समाप्त करा दिहल ।

२००७ सालक जनक्रान्तिक नेतृत्व कर्ती रलक नेपाली कांग्रेस २००९

सालम पार्टी विभाजन होक नेपाली कांग्रेस कमजोर होगैल । ज्याकर कारण राजतन्त्रक पक्षम २०१५ साल फागुण १ गते रज्वा महेन्द्र नेपालक संविधान-२०१५ घोषणा करल, यी संविधान नेपालक तिसरा फ्यारा बन्लक संविधान रह ।

नेपाल अधिराज्यक संविधान-२०१५ से समेत रज्वा महेन्द्र सन्तोष नै होक २ वर्ष संकटकाल (२०१७-९-१ से २०१९-९-१ सम्म) लगाईल । प्रत्यक्ष शासन कर्ना महेन्द्रक इच्छा, अभिरुचीसे तयार हुइलक नेपालक संविधान २०१९ पञ्चायती संविधानक नाउसे परिचित रह । र ज्वक हुकुमी निरङ्कुश पञ्चायती संविधान २०१९ पहिला फ्यारा नेपालक सार्वभौम सत्ता र ज्वकम निहित कै गैल जौन निरङ्कुश पञ्चायती व्यवस्था २०४६ साल सम कायम रहल ।अैसीन व्यवथाक विरुद्धम २०४६ सालम जनता सरकम उत्रल ओ पञ्चायती व्यवस्थाके शाषण ढलल लेकिन उ फ्यारा फे राजतन्त्र नेपालम कायम कै गिल।

जनआन्दोलन पाछ अन्तरिम सरकार बनल ओ लौव संविधान कसिक बनैना विषयम छलफल चल्ती रहल व्याला २०४७ बैशाख २८ गते रज्वा वीरेन्द्रसे अन्तरिम सरकारक सल्लाह विना विश्वनाथ उपाध्यायक अध्यक्षतामा संविधान सुधार, सुझाव आयोग गठन कैगैल । पाछ याकर विरोध हुइल तब त्रीपक्षिय सम्झौतासे तिन पक्षके (ने.का. क तर्फसे दमननाथ ढुङ्गाना, मुकुन्द रेग्मी, लक्ष्मण अर्याल, संयुक्त वामोर्चासे माधव नेपाल, भरत महोन अधिकारी, निर्मल लामा ओस्तक रजवक ओरसे पद्युम्न लाल राज भन्दारी ओ रामनन्द प्रसाद सिंह) समावेश कैक समिति बनल ओ नेपाल अधिराज्यक सविंधान-२०४७ जारी कै गील । उ संविधान तुलनात्मक रुपम तब सम्म बन्लक संविधानसे प्रजातान्त्रिक हर तभू सक्कु जाती, बर्ग, क्षेत्र, महिलाके समस्याक संवोधन कर नि स्यकल । सक्कु जाती, वर्ग, क्षेत्रके जनतन बरुब्बर अधिकार प्रदान नि कर स्यकल । संविधान २०४७ राजतन्त्रक पक्षधर रह । उ संविधान रज्वह बलार बनैना रह । फेर यी संविधान सकिय राजतत्रहँ बलार बनैना काम करल । यी संविधान क बाधा अडचन फुकैना अधिकार रज्वकम र ना धाराक प्रयोग कर्क रज्वा ज्ञानेन्द्र आपन प्रत्यक्ष निरङकुश शासन शुरु करल । यी शासन व्यवस्थाक विरुद्ध दश वर्षे जनयुद्ध हुईल नेपालम शासन व्यवस्थाक विरुद्ध सबसे ढ्याउर जनता ज्यान गूमैल । निर्दोष जनतन सैत्तीम हत्या कै गिल , वेपत्ता पार गैल । उन्नईस दिने जनआन्दोलन-२ म सबसे ध्यार नेपालीन्क ज्यान गैलिन ।

नयाँ नेपालक निर्माण कर्ना उद्देश्यक साथ २०६२ २०६३ क एतिहासिक जनआन्दोलन भाग २ सम्पन्न हुईल् । हजारौं जनता सरकम उत्रल । जौन आन्दोलनक भार थाम्ह नि सेक्क र ज्वा ज्ञानेन्द्र सार्वभौम सत्ता जनतनम रलक ओ आपन प्रत्यक्ष शासन अन्त्य हुईलक घोषणा कर ल । प्रतिनिधिसभा पूर्नस्थापना कैगिल । २०६३ साल असार २ गते प्रचण्ड पहिला फ्यारा सार्वजनिक हुइल । २०५२ सालसे शसस्त्र जनयूद्धम रलक ने क. पा. माओवादी ओ सरकारक विचम २०६३ साल मंसिर ८ गते विस्तृत शान्ती सम्झौता सम्पन्न हुईल ओ नेपालम दश वर्षे शसस्त्र द्वन्द्व के औपचारिक रुपम समाप्त हुईलक घोषणा हुईलसर्वोच्च अदालतक पुर्व न्याधिश लक्ष्मण प्रसाद अर्यालक संयोजकत्व म अन्तरिम संविधान मस्यौदा समिति गठन कैगैल । नेपालम विध्मान रलक समस्याहँ बार्ताक माध्यमसे समाधानक बिन्दुओहर पुगैति संविधान सभाक चुनाव रकैना मूल लक्ष्य लेक अन्तरिम संविधान जारी कै गिल । ने.क.पा. माओवादी फे सरकारम

समावेश हुईल । अन्तिम् संविधान विभिन्न समुदायक मूल मर्म हैं नि सम्यात स्यकल कैक नेग्जक विभिन्न समूलदायक दावाव ओ सुभावसे ३ फ्यारा आन्तरिम संविधान संसोधन हुईल । २ फ्यार संविधान सभा निर्वाचनक मिति सार गैल । संविधान सभाक निर्वाचनहँ निष्पक्ष ओ स्वतत्र बनाइकलाग सात दलक विच्चम २३ बुँदे सहमतिफे हुइल । यी सहमतीक आधारम संविधान सभाक निर्वाचन २०६४ साल चैत्र २८ गते हुइना पक्का हुइल । १८ वर्षउमेर पुगलक नेपाली नागरिक हुंकरसे वालिकमताधिकार अुनसार समानुपातिक पद्धति ओ वहुमतिय पद्धतिकैक कुलजम्मा ६०१ जन पुग्थ । जेहिमसे चुनावम प्रत्यक्ष जित्क जैना २४० जन, समानुपातिकमसे ३३५ जान ओ प्राविधिक तथा संविधान सभा विशेषज्ञ २६ जन रना व्यवस्था बा ।

अंसिक विभिन्न समयम संविधान सभाक कर जैना कती कति शाह वंशिय राजतन्त्रक कारण संविधान सभाहं ओभ्फेलम पर्ल । यी जनआन्दोलन पाछ बन्लक सरकार फे संविधान सभाक निर्वाचनह ब्याला ब्यालम सार्क जनतनम ईच्छाम कुठाराघात कर्ठ कि ओ संविधान सभाक लाग फेर और जनआन्दोलन कर परठ कि मनसिकताम पुगल जनता आब ढुक्क हुईल बाट । ढ्याउर दिनसे संविधान सभाक हावा केल सुन्लक जनता अब्खन संविधान सभा कर पैना हो रख्ली ।

संविधान सभा ओ जनतनक चाहाना

पहिलसे विद्धमान रलक एकात्मक केन्द्रिकृत स्वरुपहन आब बन्ना संविधानम संघात्मक, संघीय शासन व्यवस्था रहक लाग विविधता व बहुलताहँ प्रतिविम्बित करपर्ना एकदम जरुरी बा । संघात्मक संरचना रहल अनेकौं देश फे बा । जस्त सोभियत संघ, स्वीस, अमेरिका, वेल्जियम, भारत, जर्मन आदि । संघीय राज्य प्रणाली नेपालक सन्दर्भम यहाँक मौलिकता क आधारम हुइपर ि, जौन नेपाली समाजक हरेक क्षेत्रसे प्रतिनिधित्व कर सेकी । संघीय राज्यक व्यवस्थापन, निर्माण, गठन नेपाली जनता अप्नहँ करपही ।

संघिय राज्य

संघीय प्रणालीम दुइमेरक (प्रादेशीक ओ केन्द्र) सरकार रना व्यवस्था रहथ । केन्द्रिय सरकार राज्य ओ संघ राज्यक प्रतिनिधित्व कर्ति राष्ट्रिय व अन्तर्राष्ट्रिय भूमिका खेल्था । पुरा सर्ज मुलुक भरीक अर्थ (मुद्रा) , विदेश मामिला ओ रक्षा व्यवस्था केन्द्रिय सरकारक हेर्ना रथस् कलसे संघात्मक राज्यभित्तर आर्थिक , सामाजिक, धार्मिक, भाषिक लगायत सब क्षेत्रक उन्नति, प्रगतिक समुचित समन्वय कर पर्थिस । संघात्मक राज्य हुँक्र आपन क्षेत्रम अर्थ, विदेश व रक्षा बाहेक सम्पूर्ण कामक नेतृत्व कर पैना रथिन । असिन अवस्थाम केन्द्रियसे संघीय सरकारक भूमिका समन्वयकारी व नेतृत्वदायी रथिस । याकर लाग केन्द्रिय संघीय सरकारम, संघ राज्य व आम जनताके प्रतिनिधित्व कर्ना दुइथो व्यवस्था रह परथ ।

(क) केन्द्रीय सरकार- संघीय राज्य प्रणाली संचालन कर्ना एक केन्द्रीय सरकार रहथ । यी सरकारम संघीय राज्यक प्रतिनिधित्व आमजनतासे चुनगैलक प्रतिनिधि हुकनसे समानुपातिक आधारम केन्द्रिय सरकारक गठन रहथ ।

(ख) केन्द्रीय जनसभा- केन्द्रीय जनसभा दुई सदनात्मक व्यवस्था रहथ । पहिला संघीय सभा व दोसा जनप्रतिनिधि सभा । १. संघीय सभा ओ २. जनप्रतिनिधि सभा । संघीय सभा, संघीय

राज्यक प्रतिनिधि हुकहनसे गठन हुइथ कलसे जनप्रतिनिधि सभा दलीय प्रतिस्पर्धाम वालिक मताधिकारक आधारम खुला जनमतसे सम्पूर्ण देशभरिक निर्वाचन मार्फत गठन हुइथ ।दुनु सदनक गठन अलग अलग ढंगसे हुइलसेफे दुनु सदनक अधिकार बराबर रहथ व दुनुसदनक संयुक्त अधिवेशनसे विधायिका के काम करथ । याकर निर्देशनम केन्द्रीय सरकारक गठन हुइथिस ।

१- जनप्रतिनिधिसभा (संसद) म जनप्रतिनिधिसभा तल्लो सदन रहथ । यी सदन देशक प्रतिनिधित्व करथ । बालिकमताधिकारक आधारसे दलीय प्रतिस्पर्धा मार्फत समानुपातिक प्रतिनिधित्वको सिद्धान्त अनुसार चुन्ना व्यवस्था रहथ ।

२- संघीय सभा (संसद) म संघीय सभा उपल्लो सदन रहथ । यी सभा स्थायी सदन हो । संघीय राज्यसे चुनलक सदनक गठन कै जाइथ । देशक सक्कु संघीय राज्यसे समानुपातिक प्रतिनिधित्व यी सभाम कराजाइथ । याकर अतिरिक्त स्वायत्त क्षेत्रक प्रतिनिधिहन फे काम कर्तव्य व अधिकार बराबर रहथ ।

३ - राज्यसरकार-संघीय राज्य प्रणाली अनुसार केन्द्रके अतिरिक्त राज्य सरकारक व्यवस्था रहथ । जातिय, भाषिक,साँस्कृतिक या अन्य कौनौ विशेष आधारसे गठन हुइलक राज्य प्रदेशके दैनिक काम संचालन कर्ना जिम्मा राज्य सरकारके रहथ, याकर गठन विधिफे समानुपातिक रही । यी सरकारम जातिय राज्य सरकारक हकम उ जातिक ५० प्रतिशत व उ जातसे अलग गैह जातिक ५० प्रतिशत प्रतिनिधित्व कारक गठन कर्ना उचित बा ।

प्रादेशिक संसद- प्रादेशिक राज्यमफे दुई मेरके संसद रथ । संघीय जनप्रतिनिधि सभा व राज्य सभा ।

१- संघीय जनप्रतिनिधिसभा- यी सभा संघीय राज्यक तल्लो सदन हो यी सभाम , संघराज्यक गठन के आधार मुताविक प्रतिनिधित्व कैजाइथ ।

२- संघीय राज्य सभा- यी सभा संघीय राज्यक उपल्लो सभा प्रस्तावित कै जाइथ । यी सभाके गठन स्वायत्त क्षेत्र, विशेष स्वायत्त क्षेत्र, अल्पसंख्यक, धार्मिक, सामुदायिक ,संघ राज्यम विशिष्ट योगदान रलक व्यक्ति हुँकन प्रतिनिधित्व कराक गठन कैजाइथ ।

यी दुनु सदनम महिला व उत्पिदनम परल जातिके प्रतिनिधित्व उल्लेख्य संख्याम अनिवार्य कराइपरथ ।

संघीय राज्यक संरचना

१- थारुवान प्रदेश- चितवन,नवलपरासी,रुपन्देही,कपिलबस्तु,दाङ,बाँके,बर्दिया, कैलाली, कञ्चनपुर ।

२-लिम्बुवान प्रदेश- ताप्लेजुङ,पाँचथर,इलाम,सुनसरी,धनकुटा,तेह्रथुम ।

३- खम्बुवान - भोजपुर, सोलुखुम्बु, ओखलढुङ्गा,खोटाङ,संखुवासभा, उदयपुर ।

४- मधेश- सप्तरी, सिराहा, धनुषा, महोत्तरी, सर्लाही, रौतहट, पर्सा, बारा ।

५- ताम्बासालिङ- सिन्धुलि, रामेछाप, दोलखा, सिन्पाल्चोक, काभ्रेपलान्चोक, नुवाकोट, रसुवा, धादिङ, मकवानपुर ।

६- नेवा- काठमान्डौ,ललितपुर, भक्तपुर ।

७- तमुवान- गोरखा, लमजुङ्ग, तनहुँ, स्याङजा, कास्की, मनाङ,मुस्ताङ,पर्वत ।

८- मगरात- म्याग्दी,वाग्लुङ,गुल्मी, पाल्पा, अर्घाखाँची, प्युठान, रोल्पा, रुकुम,सल्यान डोल्पा ।

९- खसान- हुम्ला, जुम्ला,मुगु,कालीकोट, दैलेख, बझाङ,बाजुरा, जाजरकोट, सुर्खेत,अछाम

१०- नमुना- दार्चुला, बैतडी, डडेलधुरा, डोटी ।

११- कोचिला-झापा,मोरङ ।

सन्दर्भ सामग्री- १- यस्तो हुनुपर्छ राज्यको संरचना ।
२- नेपाली जनताका प्रमाणहरु तथा संविधान सभाको प्रयोग
३- शिक्षक बुलेटिन २०६४

आदरणीय गोचाली अप्नेह यि गोचाली अंक १५ कसिन लागल तिट मिठ जसिन लागल अमुल्य सल्लाह सुझाव और टिप्पणी कर जिन बिसैबी ।

हमार ठेगानाः

थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान मञ्च नेपाल

(गोचाली परिवार २०२८)

धधवार-९ सिमरहवा

निरञ्जन कुमार चौधरी- ०८४ ६२०१७८,९७४८००४४७६

नरेश लाल कुसुम्या- ९८४८०५५२७६

"अभिवादन"

मोती कुमार चौधरी
धधवार-९ बर्दिया ।

अभिवादन । वीर शहिद हुँकन ।
सम्मान बा । वीर शहिद हुँकन ॥
अन्यायक विरुद्धम जीउ ज्यान दिहुइएन,
असमानताक विरोध करुइएन,
मुक्तिक लाग जन्जिर तुरुइएन,
बर्गीय सत्ता अन्ना आँत करुइएन,
अभिवादन । वीर शहिद हुँकन ।
सम्मान बा । वीर शहिद हुँकन ॥
तुँहार साहससे सामन्तीक जर उँखल,
सामन्ती राज्य सत्ता भित्रभित्र डगमगाइल,
जालि फटाहा गाउँ गाउँसे शहर ओर भाग लग्ल,
सर्बहारा मजदुर कमैया एक जुत हो सेक्ल,
अभिवादन । वीर शहिद हुँकन ।
सम्मान बा । वीर शहिद हुँकन् ॥
गाउँ-गाउँ वस्तीम चेतना दिहुइएन,
प्रगतीशील विचार लेक आघ नेगुइयन,
सार्वभौमसत्ता जनतन्म निहित करुइएन,
मानब अधिकारक सन्देश दिहुइएन,
अभिवादन । वीर शहिद हुँकन ।
सम्मान बा । वीर शहिद हुँकन् ॥
पैना सम दुःख पैली पंचायती शासनम,
कबु कल बहुदल कबु निरंकुश तन्त्रम,
सबसे मजा कानुन कल सर्चालिस सालम,
धेर मनैन्क ज्यान लिहल दश वर्षे कालम,
अभिवादन । वीर शहिद हुँकन ।
सम्मान बा । वीर शहिद हुँकन ॥
दश वर्षे जनयुद्ध उन्नैस दिने आन्दोलन,
गणतन्त्र मुल मन्त्र विचार हुइल महान,
छोटलर्कासे बुढाइल समके देल बलिदान,
उह ओर्से सक्कु शहिदन गोचालीक अभिवानद,
अभिवादन । वीर शहिद हुँकन ।
सम्मान बा । वीर शहिद हुँकन ॥

शुभ कामना

लौव वरष २०६५ सालके शुभ अवसरम हम्रे हमार तर्फसे सक्कु देश वासिनके सुःख, सम्बृद्धि, सु-स्वास्थ्य व उत्तरोत्तरप्रगतिके लाग हार्दिक मंगलमय शुभकामना व्यक्त करति ।

धधवार गा.वि.स. परिवार

खैत हमार लाग परिवर्तन ?

जीतराम चौधरी 'संघर्ष ज़ितु'

शुरु करहबेर मन कैसिन कैसिन महसुस थारुन्हैं पाहिलसे लेक आभ्रुक अवस्था समभ्रक । आभ्रुक परिस्थिती, अवस्था व और कठिन उच्त जानिन्हँक अवस्थास तुलना करे बेला हुक कहाँ पुग सेक्ल लेकिन हभार अवस्था खैना, लगैना, बैठना, बेराम हुईलसे दवाई बुती कर्ना , लर्कन पढ़ैना धौ धौ परल बा यी आधारभूत आवश्यकता परिपर्ती कना फे हमहन बरवार चुनौती बनल बा । बर्दिया जिल्लाके परिवेशम रहके बात करी शुरुम मै अपने थन्दे शुरु करे चाहते हम्रे यहाँके आदिवासी जनजाति हुई । हमार पूर्खावन पुस्तौ पुस्तासे यहै बसोबास करनै गभिन भोर्‍या फारक खेतीपाती करनै व आपन जिन्दगी बितैनै । तबो फेर शिक्षा, सम्पत्ति , जग्गा जमीन के हकमा कैसीनके हम्रे पाछे परली ? हमार पुर्खनके फाँरल व जोतल कोरल जग्गा कहाँ गईल ? हमन का करे औरक जग्गा जोतक परता ओ बेगार ी करेक परता ? मनम धेर प्रश्न उठ्ठ । मै अस्ते सवालके इतिहासके बारेम हमार पुर्खावनसे पुछ्ठुँ । २०३८ सालम सानोश्री ओ तारातालम पर्नवास करल । उ व्यलम हमार काका फे पूर्नवासके जन्गा पैना हो । काकर की हमार काकनके एक धुर जग्गा नि हुईतिन आजकाल और क जग्गा लगाक जिन्गी बल जस्ती गुर्जती बाट । मै काका किहीन पुछ्नु "काका तुहरे पदनाहा गा.वि.स. र बर्बट्टाम बैठके फेन तारातालम पुनर्वास जग्गा देहेबेला कैसीनके नाई पैलो तुहरे जग्गा बुझे काकरे नाइ आइलो । आज लदिया नाँहाड्के औरेक जग्गा बटैया लगायक परता ।

यी सवालके जवाफ मैं ऐसीन् पैनु " कहाँ जग्गा बुझें जाय मिलल, हमरे हमार बाबनके सक्कु जिम्दारुवाक घर कमैयाँ लागल रही जिम्दारुवा से पुछ्ली तो जिम्दारुवा सोझे कहि देहल का करे जइबो रे जग्गा बुझे, तुहरे चलजैबो तो मोर हर के जोती, मोर हर जोतो, काम करो खाओ" बस वहाँ से बाते ओरइगिल् । तब्बे त जिम्दरुवाके कहल मन्हीक परे नै तै ....का हुईने रह का जन "

हो, यी जवाफसे लागथ हमार थारुन्हँके अवस्था आज दयनीय हुईनाम मुख्य हाँथ सामन्तीन्के बाटिन । जौन सामन्ती शासनके विरुद्धम जनता विरोध कर्टी बाट । ओ सामन्ती संस्कारक अन्त्य करक लाग १९ दिने जनआन्दोदन हुईल । सामन्ती सत्ताके कारण आज अधिकांश थारु अधिया बटैया जोतके खैती बाटी, बठ बेगारीम से उम्के नाई सेक्ल हुई, कैयौं बाल बालिका बधुँवा मजदुर बाटैं । २०५७ सालम सरकार कमैया मुक्तक घोषणा करल । लेकिन अभिन् फेर एक्काईसौं शताब्दीमा कम्मलही, भैसरवा जसिन दास प्रथा कायम बा । स्कूल जईना उमेरके भाई बहिनीयाँ अभिन होटल होटलम भाँडा मिस्ती बाटैं । ज्यालम काम करुइया मजदुर हुँक्र दिनभर पस्ना बहाके साँझके पेट भरे नै पईल हुईट । अब्ब लोकतन्त्र आईल कठ लेकिन जानतन का पैल बाट, कैसीके कहना यहाँ परिवर्तन हुईल ?

अभिन द्वन्द्व पीडित परिवारके बात करना हो कहले से लिख्के कौनो साध्य नाई हो । यिहे परिवर्तनके क्रममा कैयौं मनै निर्दोष ज्यान गुमाय पुग्नै । कत्रा अंगभंग हुइनैं, कत्रा दिदी

बहिनीन् के चुरिया फुटल । बर्दियामकेल दुई सय से धेर परिवार आपन मनै फिर्ता आइही त घर के छप्रा छइहीं कहती बैठ्लक ५-७ वर्ष हो गैलिन । टुटल छप्रातिर बैठके घर से गल्ली सम्म साँझ विहान दिन दुपहर बत्या हेरती बाटैं, हजारौं बाल बच्चा आपन बाबके अनुहार ह्यारकतन छट्पटाईल बाट । खैना खुदी नाई लगाईना लुग्गा लत्ता नाही, बैठ्ना झोप्री नाई बस अस्य अस्याम बैटल बाट लेकीन कौनो अत्तो पत्तो नाई रहल परिवारके पीडा एक कलम से कापीम बयान कर ना अवश्य फेर असम्भव बा ।

यी अवस्थामा रहल पीडित परिवतरके कैयौं दाई बाबान्के आँखीक सामन्ने तोर छावा किहीन एक घचिक पाछे फिर्ता कै दिहब, कहती पत्काउ करके लैगील छावा-छाईके आईना डगर हेरती हेरती आँखी बन्द हो गईलिन कायौक आँखी बन्द हुईना अवस्थाम पुग स्याकल बाट । उ बुहाईल दाई बाबनक बुहाईल ब्यालक टेक्नी के बन देना ? उ बुढाईल दाई बाबान् डोऱ्याए व हाथम टेक्नी पुगुईया लड्का कहिया फिर्ता आईहीन ? का बन्दुकके खेती करुईया हुँकन लाग् अभिन एक घचिक पूरा नाई हुईल हुईटिन ? एक घचिक कहलक ५-७ वर्ष वित स्याकल, अभिन कत्रा लम्बा समय हो कुछ पत्ता नि हो ? पीडित परिवारके धुर खुँटा जैसिन मनैन् पकरके लैगईलक कारण का हो ? का दोष लगाके आजसम्म बेपत्ता पार गईल बाटैं ? भुखले बैठल लड्का बच्चन्के पेट भरे बाबा हुंक कहिया घरम अइेहिन ? कौन कानुन कहल बा पत्काउ करल मनैन बेपत्ता पर्ना व ज्यान मर्ना ? यी सवालके जवाफ आजके लोक तान्त्रिक कहलईना सरकार व परिवर्तन हुईल कहिके भाषण करुईया नेता हुके पीडित परिवार हन देहना आजके नितान्त आवश्यकता हो । नाई त गल्ली गल्लीम भाषण करल से गल्ली गल्लीम गाउँम कुकुर भुँकाक कुछ नि हुई । अत्रा केल नाहीं पीडित परिवारके आधारभूत आवश्यकता, गास, वास, कपास, शिक्षा, स्वास्थ्य लगायत रोजगारी क ग्यारेन्टी पीडित परिवारक सदस्यहुकन सम्मान पूर्वक शान्ती ओ सुरक्षाक प्रत्याभूती हालिसे हाली कराई पर्ना बा । साथमा हतियारके खेती करती मानैन्हँक शिकार खेलुईया अपराधिन् तुरुन्त कानुनके डायरा भित्र नान्के कारबाही कर परल तब केल कह सेकजाई परिवर्तन हुईल । नई त हमार लाग का परिवर्तन हुईल ? परिस्थिति उहे बा, पीडा उहे बा, समस्या उहे बा जनताके लाग परिवर्तन ? का लोकतन्त्र आईल ? औरक घरक सदस्य बेपत्ता पार्क, हत्या कैक रमुउईय हुक एक फ्यारा आपन घरक सदस्य बेपत्ता हुईलक कल्पना कै देउ ओ पीडा क अनुभुत कै देउ ओ कहो का यहाँ जात्तीकसे परिवर्तन हुईल बा, शान्ती आईल बा, लोकतन्त्र आईल बा ?

धर्मवस्ती, तारातार-७, बर्दिया

"अधिकार हम्र स्थापित करी शोषित पिडित जनतनम"

मान बहादुर चौधरी "थपलिया"
सौडियार-७(सात) सौडियार दाङ्ग
(हाल :- धधवार-९ बर्दिया)

तराई भर सक्कु बन्वा जो रह फाँर दर्ल किसान,
बाघ भाल नुक्ना झोऱ्याक फत्वा पली बा निसान ।
औलो उन्मूलन हुईल त पहाड से झर्ल सामन्तीन,
जग्गा भर सक्कु आपन नाउँम करैल शोषक सामन्तीन् ।
जग्गा तोर कहाँ नै जाई कैक झुक्यैल अनपढ किसानन् ,
जोतो ओ उब्जनी खाओ कैक फुस्लैल स्वाझ किसानन् ।

कुछ समय पाछ किसान हुँकन शोषण दमन कर लाग्ल सामन्तीन,
जिन्दगी भर बाँधा कमैया व कम्लहरी बनैल किसानन् ।
ऋण लिहल कैकन किर्ते कागज बनैल शोषक सामन्तीन् ,
दोब्बर र तेब्बर हिसाब कर्ल घरबास समेत लेदर्ल सामन्तीन् ।
घर जग्गा हमार खोस्क लैगैल बनैल हमन सुकुम्बासी ,
खोस्क लैगैल अधिकार हम्र बन्गैली हम्र सर्नार्थी आप्रवासी ।

अधिकार भर सक्कु आपन हाठम लिहल शोषक सामन्ती,
आब त हमार कुछु फेन नै रही गैल करी हो हम्र क्रान्ती ।
क्रान्ती कैक जनवाद लानी हमार यी नेपाल देशम,
जनतनक अधिकार सुनिश्चित करी लौव संविधानम ।
शहिदक बलिदान सम्मान कर्ति पुगाई उच्च शिखरम,
अधिकार हम्र स्थापित करी शोषित पिडित जनतनम ॥

देशके विकासके लाग युवा नेतृत्व

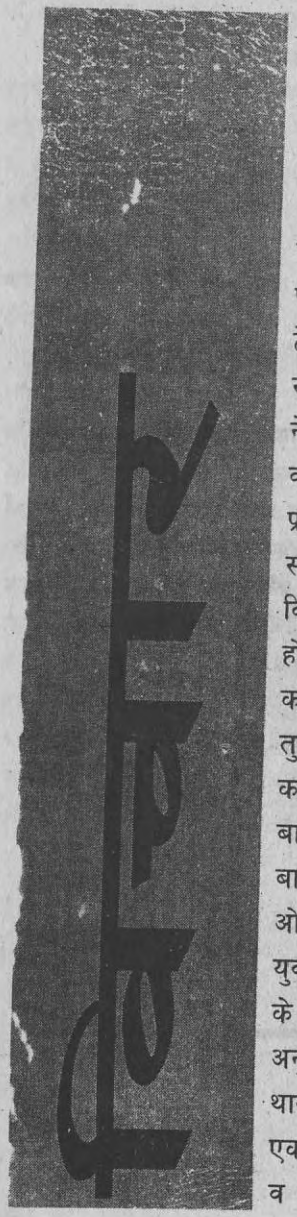

राम दयाल चौधरी
छटकपुर-९, फत्तेपुर, बाँके
हाल :महेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस
ने.गं.,बाँके बी.बी.एस. दोस्रो वर्ष

शहश्राब्दी शब्द भर्खर शुरु हुइलक २१ औं शताब्दी ह इङ्गित कर्छा । २१ औं शताब्दी म देश विकासके लाग युवा नेतृत्व के आवश्यक्ता बा । देशके विकास कलक परिवर्तन ह जनैठा । युवा कलक बुझाइल मनैनके टेक्ना लट्ठी, लौंरा-लौंरेनके आँख व देशके विकासरुपी रथके चालक ज्वजल्यमान ओजरार बिम्ब हुइट । नेतृत्व कहबेर चल्ना गोरेटो ह जनैठा । समय परि वर्तनशील बा युग प्रतिस्पर्धी । मनै सेकेन्ड-सेकेन्ड म प्रतिस्पर्धा कर्ती बाट । विकास चरम सीमा म पुग स्याकल, २० औं शताब्दी म फड्को मार सेक्ल बा । विदेशी मुलुक म ५० वर्ष पाछ के योजना तयार होगिल बा । हमार देश म आजके योजना तयार पार कन देश सञ्चालन कर्ना मुस्किल बा । विदेशके तुलना म हम्र पाछ बाटी । हमार विकास के गति म कमी बा । जात्तिक हम्र आधुनिक विकास म पाछ बाती । समग्र म कहबेर हम्र सक्कु चीज म पाछ बाटी देश के विकास वा नेतृत्व म व और म फे । ओह ओरसे युवाहुँक्र सचेत हुइ पर्ना बा । सक्कु युवाहुँक्र स्वाँच पर्ना अवस्था सृजना हुइल बा । विदेश के युवाहुँक्र लौव-लौव ग्रह व अस्तहँ और चीज के अनुसन्धान म लागी परल बाट कलसे हम्र नेपाली (थारू) युवा कसिक प्याट भरी ? कना खोजी म बाटी । एक-दुईठो थारू पहर्टी की, दुई-चारठो घर बन्टी की व बजार बन्टी की मै उही विकास निमन्ठुँ । आम्ही

फे हमा समाज म परिवर्तन नि हुइल हो । जब सम्म मानसिक परिवर्तन नि हुई, विकास सम्भव निहो ।

अनैतिकता ओंहर ढल्कना जस्त- लागु पदार्थ, मदिरापान, धुम्रपान, जुवातास जसिन और अस्तहँ दुर्व्यसन म लागकन बिग्टी जैटी देख पर्थ युवा पिंढी । आम्ही थारू युवा त झन जँरहा भोक्टी म डुबुल्की मर्टी पहुँरटी बाट । कत्रा युवा त विदेशके जमिन म आपन पस्ना बहइटी बाट- विभिन्न प्रलोभन म फँसकन । आपन धर्म संस्कृति बिस्रइटी जाइट । आम्ही फे देश म दमन, शोषण, अन्याय, अत्याचार , निरंकुश व सामन्तवाद बढ्दो बा । याकर अन्त्य के लाग युवा हुक्र सचेत होक आघ बह्र पर्ना बा । युवा हुँक्र आज हम्र सचेत नि हुइबी त कब्ब हुइबी ? कि जँर हा भोक्टी म डुबुल्की मर्टी पहुँरटी रना हो ? यी ब्याला हम्र सचेत होकन देश के विकास म लाग पर्ना बा । लौव नेपाल के खाका क्वार पर्ना बा, तब्ब हुइ हमार देश म विकास । देश विकास के लाग युवा नेतृत्व कर पर्ना बा । लौव नेपाल बनाइक लाग युवा नेतृत्व हुइक पर्ठा ।

देश के विकास के लाग युवा शक्ति के ध्यार आवश्यक्ता बा । देश विकास के लाग हम्र युवा वर्गन के ध्यार भुमिका रहठ । युवाद्वारा देश के सङ्ग्वा, डगर बन्ठा । देश के विकास के लाग सक्षम जनशक्ति के कत्रा ध्यार आवश्यक्ता पर्ठा कना बारे म मै यहाँ अवगत करटी रह निपरी । लौव नेतृत्व के लाग युवा जगत् म तीक्ष्ण बुद्धि के खाँचो बा । सगरमाथा जसिन उच्च भावना हुइ पर्ठा । ***"के हो ठूलो जगत्मा पसिना विवेक, उद्देश्य के लिनु उँडी छुनु चन्द्र एक"*** महाकवि लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा के यी पंक्ति से फे प्रष्ट हुइठा की असम्भव कना कौनो विषय निहो । हम्र युवा लौव शताब्दी म लौव नेपाल बनाइक लाग कन्धयम राष्ट्रिय जिम्मेवारी, मष्तिष्क म समझदारी व छाती म इमान्दारी लेक आघ बह्र पर्ना आवश्यक्ता बा । देश म युवा संस्थापक आवश्यक बा । कौनो फे राजनैतिक नातावाद, कृपावाद म आधारित निहुइलक "एकता जो बल हो" कना सिद्धान्त हुइल युवा संस्था के आवश्यक्ता बा । ता कि जहाँमसे देशके जल्दो बल्दो समस्या समाधान करक लाग सक्कु एक होकन लाग सेक्जाई । हुइना फे जन समुदाय कर ख्वाजल सक्कु काम सफल जो रठा । असिक शान्त वातावरण युक्त प्राकृतिक संम्पदा, संस्कृति ह यथास्थिति म धैक २१ औं शताब्दी म उ फे लौव नेपाल म देश के विकास के

लाग कसिक चल्ना, सरसरती ह्यार बेर बिदेशी विकास के बढ्दो चाप व और ओंहर देशके गरीबी से आजके हम्र युवा हुँक्र कसिक लर्ना ? कना चिन्तन जो आजकें आवश्यकता हो ।

असिक समग्र म कहबेर समय के माग अनुसार चल पर्ठा । समय के माग अनुसार सक्षम, आय मुलक शिक्षा, सीप के तर्जुमा, उद्योग धन्दा के आवश्यक्ता जसिन महत्वपुर्ण बात म देश के विकास के लाग युवा नेतृत्व के आवश्यक्ता हुइलक महसुस हुइ अइठा ।

समाप्त

आदरणीय गोचाली, थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान मञ्च नेपाल गोचाली परिवार-२०२८ से प्रकाशित हुइना गोचाली पत्रिका अंक १६ के लाग अप्नेसे रचित प्रगतिशिल लेख रचना पठाकन सहयोग कर्वि कना हार्दिक अनुरोध करति

हमार ठेगना:

थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान मञ्च नेपाल
(गोचाली परिवार २०२८)
धधवार-९ सिंमरहवा
निरञ्जन कुमार चौधरी- ०८४ ६२०१७८,९७४८००४४७६
नरेश लाल कुसुम्या- ९८४८०५५२७६

"सजना"

भगोरिया गोचाली

हरे- हमार देशक शोषित पिडित जनता रे ...ए अधिकार ख्वाज भिरल ।
अरिहो आपन अधिकारक लाग जनता संघर्षम लगल ॥

हरे- यीह देशक सामन्ती शासनरे....ए .. गरीबन दु:ख दिहल
अरीहो उठी गैल न्यायमुक्ति योद्धा सामन्तीनसे लरल ॥

हरे- मेची उठल महाकालीरे .... ए ... उठल हिमाल तराइ ।
अरीहो कहलगल देशकही लोग सामन्ती सत्ता ढलाई ॥

हरे- भेरी कर्णाली लदिया बहल रे ए.. लहर उपर उठल ।
अरीहो वइस उठल देशक जनता सामन्ती सत्ता हिलल ॥

हरे- अधिकारके लाग लर्ना जनतन रे . ए. आतङ्ककारी कहल ।
अरीहो गाउँ घरक गरीब दु:खी जनतन खोजी-खोजी मारल ॥

हरे- रिसकही मातल सामन्ती रे .. ए .. लगाइल संकटकाल ।
अरीहो आपन देशक नागरिकन मार्के विगारल देशक हाल ॥

हरे- वम गोला बारुदके वर्षा रे ए हमार उपर परल ।
अरीहो तबो फेन स्वाभिमानी जनता शाहस नही छोरल ॥

हरे- दश वर्ष जनयुद्ध चललरे.. ए.. उन्नाइसदिन आन्दोलन ।
अरीहो गणतन्त्र लानक लाग लरल यीहरे देशक जनतन ॥

हरे- दशेह हजार वीर सपुतरे ... ए .. लाल हो रगत दिहल ।
अरीहो हारी गैल सामन्ती सरकार सत्ता छोरी भगल ॥

हरे- यीह देशक वीर शहिद रे... ए.. तुँ रहहो अमर ।
अरीहो चाँद सुरुज रहतसम रहहीं कि इतिहास तुंहाँर ॥

गजल

जनादेश

जय प्रकाश चौधरी
धधवार-५, खुनतीपुर
बर्दिया

जनतनक जनादेश नेताहुक मानपरल

वर्षौ से दुखम सहल जनतनक सरकार लानपरल

धर्ती पुत्र स्वाभ्फ थारुन आग बहाइक लाग

बुद्धिजीवी थारु हुक्र हाठदेक पाछक थारुन तानपरल

कत्रा नेतन भ्वाट हारक मन्त्री फे बनासेक्ली

मन्त्री बनक काठमाण्डौम घरबनुइया नेताहुकन जानपरल

लौव नेपाल बनाक बरबवर अधिकार पैना ध्यार थारुनक आशा बा

शोषित थारुनक अगुवाई कर्ना पार्टी नेता छानपरल

संविधानक चुनाव आइल,मेरिक मेरिक नेता आक भ्वाँट मागत

भ्वाँट रुपी चन्नीलेक मजा नेता पीठा अस चानपरल

वर्षौं वर्ष दुखम रहल जनतनक सरकार लानपरल

जनतनक जनादेश नेताहुक मनपरल

रातक कुक्कुर भुक्लसे

राम चौधरी नयाँगाउ ६
जोतपुर बर्दिया

रातक कुक्कुर भुक्ल से , बहार अँगना गल्ली पुगक
मै तुँहार बटिया ह्यार जैठुँ
बाबा कहिया आई कहिक लर्का पुछ्ठ जब जब
म्वार आँखिमसे आँस गिर लागठ
रातक ....
मै तुहाँर बटिया ....

लर्कनक आँगम नि हुईटिन लुग्रा मुहम माम
मै दुख्यक कर्म नि सेक्बो बुभ्फ आँसके दाम
आपन लर्कन तुवर बनाक हुईलो बेपत्ता
समभ्फ्क मै सद्द रुई बेर दुन्यँह कौनो मतलब नाई
मै कसिक आपन जिन्गी जियम
सोच्नाफे कर्रा लागठ महिनहँ तुहाँर मौउतक
बाटो त यी दुन्यम कहिया अैबो लउतक
निर्दोष ठव्हँ मार पितक अैलिन कि काल
रो रो क आँस सक्कु ओराईबेर घर जम्म बुर लागल
मै आपनहँ बन्दगी ढर दर्नु
रातक कुक्कुर भुक्ल से , बहार अँगना गल्ली पुगक
मै तुँहार बटिया ह्यार जैठुँ

(राम चौधरी भर्खर २०६४ सालम एस एल सी देल बाट स्वर अन्ज्यादी मिठास रलक राम थारु भविष्यम गायक बन्ना सोंच बाटिन । लेखक थारु समुदायक उदयमान गायक हुईत । सम्पादक)

उठो युवा उठो

राम दयाल चौधरी
छटकेपुर-९, फत्तेपुर, बाँके

उठो युवा उठो, उठो ना आब
बढ़ो अन्याय के बिरुद्ध आब ।
घोर अत्याचार त तोरो
कत्रा ? सेक्बो सह लाछी होक ॥

अहित कब्बु नाकरो आब
कपती नाकरो न्याय म आब ।
बोलो निरंकुश व सामन्तवाद के बिरुद्ध
कत्रा ? सेक्बो सह दमन व शोषण आब ॥

त्यागो सबथोक गलत नियत
बनो सत्कर्म अस्तहँक नित्य ।
तोरो समाज म रहल कुरीति
फैलाओ समाज म शिक्षा के ज्योति ॥

दाइजो प्रथा तोरो अपन्ह आब
बाल विवाह के बिरुद्ध उठाओ आवाज ।
समाज म करो मानसिक परिवर्तन
हुइ तब्ब समाज हमार परिवर्तन ॥

कहाँ सम्म पाछ परल रही हमार समाज
आघ बढ़क लाग करो युवा नेतृत्व आब ।
उठो युवा उठो, उठो ना आब
बढ़ो अन्याय के बिरुद्ध आब ॥

ꢮसमाप्तꢯ

प्रेस-विज्ञप्ती

मिति [illegible]

सदियौ बर्षसे झङ्झङ्ग्यार हुईटी रलक सामन्तवाद, निरङकुशता, विभेद, उत्पीदनक अन्त्य करकलाग लम्मा समयसे थारु समुदाय आन्दोलनरत रती आईल बा । थारुन्हंक व्यापक जनसहभागीता ऐतिहासिक जनआन्दोलन भाग-२ से १३८ बरष पुरान सामन्तवादकके पृष्ठपोषक राजतन्त्रहँ मुर्छा पार गैल ओ लौव नेपाल निर्माणके लाग दुवार खोल गैल । लेकिन सक्कुमेरिक सामन्तबाद, विभेद, शोषणके समूल नष्ट कैक समुन्नत नेपालके निर्माण हुईना बहुत्त चिज बाँकी बा । जनआन्दोलम थारु समुदायक व्यक्त भावनाक कदर आन्दोलन पाछ बन्लक लोकतान्त्रिक सरकारसेफं पूरा निहुई स्याकल ।

नेपाल अधिराज्यके संविधान-२०४७ सक्कु जाति, वर्ग ओ समुदायहँ बराबर अधिकार निदेह सेक्लक कारण जनआन्दोलनक उपलब्धीहँ सस्थागत करकलाग अन्तरिम संविधान-२०६३ जारी कै गिल लेकिन अन्तरिम संविधान २०६३ फे थारु जननन अधिकार सम्पन्न बनैना ओहर पैला आघ बढ़ाइल निदेख परठ् । अन्तरिम संविधान मूल संविधानक पहिला प्रारुप हो कना बाट थारु समुदाय मज्जासे बुझ्ल बात । तराईम भूमिपुत्र थारुन्हंक भावनाहँ बिना समेट्ल बना गैलक अन्तिरम संविधान हमार पक्षम निहो । यीह संविधानहँ जस्त बा ओस्त मन्ना थारु समुदाय तयार निहोक यीहीम व्यापक सुधार संसोधन करलकाल नेपाल सरकारसे थारु गोचालिनक जोडदार माग बा ।

देशम विद्यामान जातिय, वर्गिय, क्षेत्रिय, लैङ्गिक समस्याक समाधान करकलाग संविधान सभा मार्फत राज्यक अग्रगामी पुर्नसंरचना कना नेपाली जनतनके संकल्प व्याला-व्यालम सार जैति बा । संविधान सभाम आदिवासी, जनजाती, दलित, मधेसी, महिला, मुक्त कमैया सक्कुन्हंक समानूपाती प्रतिनिधित्व कैक संविधान सभासे बन्लक संविधान सक्कुन्हंकलाग स्विकार्य रही । संविधान सभाक निर्वाचन निष्पक्ष, स्वतन्त्र ओ सक्कुन्हंक प्रतिनिधित्वमूलक बनाईलाग मिश्रित निर्वाचन प्रणाली उपयुक्त निहो । यीह निर्वाचन प्रणालीसे कै जिना निर्वाचनम थारुन्हंक समानुपातिक प्रतिनिधित्वक सुनिश्चितता निहो । उह मार संविधान सभा निर्वाचन प्रणाली परिवर्तन करकलाग थारु गोचालिहुकन्हंक जोरदार माग बा ।

आदिवासी थारुहुक स्वःअस्तित्वके लाग हरदम लर्ती आईल बाट ओ सास रहतसम्म लर्टीरने बात । थारु भाषा साहित्यक ओ समग्र थारु जातिन्हंक उत्थान कर्ती थारु समूदायहँ अग्रगमन ओहर छ्लाङ मरैनाम अगुवाई कना थारु अगुवा बुद्धिजिवि हुकहन हिन्दु अतिबाहमणवादी सामान्तीहुक विभिन्न बाहानाम सखाप पर्ना दाउ धर्ल । आपन जातिके अधिकारके आवाज उठैलक कारण थारुहुकंन अधिक मात्राम बेपत्ता पारगैल ज्याकर अभिन सम्म कौनो अत्तो पत्तो नि हो । विस्तृत शान्ति सम्झौता, अन्तरिम संविधान-२०६३ लगायत २०६४ पुष महिनम कैगिल सात दलके २३ बुंदे सहमतीम बेपत्ताके स्थिति सार्वजनिक कना प्रतिवद्धता कर्लसेफं दिहल भाखा नहँग्लक आबा धिउर दिन सम्मफे बेपत्ता पारगेल नागरिकक अवस्था सार्वजनिक निहुईल हो । अतः शसस्त्र द्वन्द्वके कमम बेपत्ता पारगैल सम्पूर्ण नागरिक हुकन्हंक अवस्था सार्वजनिक लगायत थारुन्हंक निम्न माग तत्काल सम्बोधन करकलाग नेपाल सरकार , सक्कु राजनैतिक दलहुकहन्से जोरदार माग करती ।

१. संविधान सभाके मिश्रित निर्वाचन प्रणाली परिवर्तन कैक जातिय जनसंख्याके आधारम पूर्ण समानुपातिक निर्वाचन प्रणाली से संविधान सभाके निर्वाचन हुई पर्ना ।
२. अन्तरिम संविधानसे आत्म निर्णयके अधिकार सहितके जातिय गणराज्यक सुनिश्चितता करल परल ।
३. अन्तिरिम संविधानम रलक मधेस शब्द हताके थरुहट हुई पर्ना जोरदार माग करटी ।
४. शसस्त्र द्वन्द्वके कमम बेपत्ता पारगैलक नागरिक हुकन्हंक अवस्था तत्काल सार्वजनिक करक परल ओ द्वन्द्व पीडितन्हंक न्यायके लाग संक्रमणकालिन न्यायक व्यवस्था करक परल ।
५. थारुन्हंक घन बसोवास रलक क्षेत्रम थारु भाषाहँ तत्काल सरकारी कामकाजम लागु करक परल ।
६. राज्यक हरेक अङ्गम थारुहंक जनसंख्याके आधारम समानुपातिक सहभागी कराईक परल ।
७ थारु समुदायम रलक बरघर प्रणालीहँ राज्यसे कानूनि मान्यता प्रदान करक परल ।
८ सक्कु राजनैतिक दलम थारुन्हंक जनसंख्याके आधारम आन्तरिक समावेशीकरण हुईक परल ।
९. मुक्त कमैयाहुकन्हंक समस्या सामाधानके लाग तत्काल कदम चालक परल ।
१०. नेपालम विकसित दण्डहिनताके अन्त्य करक परल ।

अन्तम, उपरोक्त थारु गोचालिनक माग वर्तमान सरकार, राजनैतिक दल समयम पुरा कै दिहकलाग जोरदार माग करटी ओ अधिकारबादी सक्कु नागरिक हुकहन यिह विज्ञप्ती मार्फत मैगर आँपन करटी । थारुन्हंक उपरोक्त मागहँ समयम पुरा नि कर्लसे थारु गोचालिहुक्र सशक्त आन्दोलनम उत्रना बाध्य हुईबी

अध्यक्ष